

Bihar BET Sample Paper 1 Hindi

Q1. कॉलेज X और Y में विज्ञान पढ़ने वाले छात्रों की औसत संख्या और कॉलेज Z और A में कला पढ़ने वाले छात्रों की औसत संख्या में क्या अंतर है?

नीचे दी गई तालिका में छह अलग-अलग कॉलेजों में कुल छात्रों की संख्या और कला एवं वाणिज्य विषय में अध्ययनरत छात्रों का प्रतिशत दर्शाया गया है। तालिका का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

कॉलेज	कुल छात्र	कला अध्ययन करने वाले छात्रों का प्रतिशत	वाणिज्य की पढ़ाई करने वाले छात्रों का प्रतिशत
एक्स	1200	15%	25%
और	800	35%	40%
साथ	1600	12%	48%
ए	1000	44%	16%
बी	600	20%	35%
सी	2100	30%	40%

प्रत्येक कॉलेज में कुल छात्र = कला, वाणिज्य और विज्ञान की पढ़ाई करने वाले छात्र।

- (a) 206
- (b) 120
- (c) 216
- (d) 144

Ans.(a)

Sol: Average number of student studying science in college X & Y = $\frac{1}{2} \left[1200 \times \frac{60}{100} + 800 \times \frac{25}{100} \right]$
 $= \frac{920}{2} = 460$

Average number of student studying arts in college Z & A = $\frac{1}{2} \left[1600 \times \frac{12}{100} + 1000 \times \frac{44}{100} \right]$
 $= \frac{632}{2} = 316$

Required difference = 460 – 316 = 144

Q2. प्रत्येक कॉलेज में कुल छात्र = कला, वाणिज्य और विज्ञान की पढ़ाई करने वाले छात्र।

- (a) 6%
- (b) 4%
- (c) 10%
- (d) 9%

Ans.(b)

Sol: Males studying commerce in college Z = $1600 \times \frac{48}{100} \times \frac{3}{8} = 288$

Females studying science in college A = $1000 \times \frac{40}{100} \times \frac{3}{4} = 300$

Required percentage = $\frac{300 - 288}{300} \times 100$

= $\frac{1200}{300} = 4\%$

Q3. प्रत्येक कॉलेज में कुल छात्र = कला, वाणिज्य और विज्ञान की पढाई करने वाले छात्र।

5 : 7

7 : 5

8 : 9

9 : 8

उत्तर: ए

Sol: Total student studying arts in college X & science in college B together = $1200 \times \frac{15}{100} + 600 \times \frac{45}{100}$
= $180 + 270 = 450$

Student studying science in college C = $2100 \times \frac{30}{100} = 630$

Required ratio = $\frac{450}{630} = 5 : 7$

Q4. प्रत्येक कॉलेज में कुल छात्र = कला, वाणिज्य और विज्ञान की पढाई करने वाले छात्र।

(a) 150%

(b) 120%

(c) 190%

(d) 110%

Ans.(c)

Sol: Total commerce student studying in college Y & C together = $800 \times \frac{40}{100} + 2100 \times \frac{40}{100} = 1160$

Total arts student studying in college B & Y together = $600 \times \frac{20}{100} + 800 \times \frac{35}{100} = 400$

Required percentage = $\frac{1160 - 400}{400} \times 100 = 190\%$

Q5. प्रत्येक कॉलेज में कुल छात्र = कला, वाणिज्य और विज्ञान की पढाई करने वाले छात्र।

210

180

200

240

Ans.(d)

Sol: Required average = $\frac{1}{2} \left[1000 \times \frac{16}{100} + 800 \times \frac{40}{100} \right]$
= 240

Q6. सूची-I का सूची-II से मिलान करें:

सूची - I	सूची - II
ए. शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण	I. योग्यता आधारित शिक्षा
बी. स्व-गति से सीखना	II. मोंटेसरी पद्धति
सी. निपुणतापूर्ण अधिगम	III. प्रोग्राम्ड इंस्ट्रक्शन
डी. व्यावहारिक उद्देश्य	IV. ब्लूम का वर्गीकरण

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A-III, B-II, C-I, D-IV

(b) A-II, B-III, C-I, D-IV

(c) A-II, B-I, C-III, D-IV

(d) A-IV, B-II, C-I, D-III

उत्तर:

बी

सूरज:

सही विकल्प - (ख)

परिचय: मिलान वाले प्रश्न शैक्षिक सिद्धांतों, अनुदेशात्मक डिज़ाइन और कार्यप्रणाली के बारे में वैचारिक स्पष्टता का परीक्षण करते हैं। यह प्रश्न दृष्टिकोणों/विधियों को उनके प्रमुख शैक्षिक ढाँचों या मूल स्रोतों से जोड़ता है।

सूचना संवर्धक:

• ए-II: मोंटेसरी पद्धति शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण पर जोर देती है जहाँ बच्चे की ज़रूरतों और गति सीखने की गतिविधियों को निर्धारित करती हैं।

• बी-III: प्रोग्राम्ड इंस्ट्रक्शन छात्रों को अपनी गति से आगे बढ़ने की अनुमति देता है, जिससे यह स्व-गति से सीखने की प्रक्रिया बन जाती है।

• सी-आई: योग्यता-आधारित शिक्षा निपुणता प्राप्त करने पर केंद्रित है — यह सुनिश्चित करना कि शिक्षार्थी आगे बढ़ने से पहले आवश्यक कौशल प्रदर्शित करें।

• डी-IV: मापने योग्य सीखने के परिणामों के लिए व्यवहार संबंधी उद्देश्यों को तैयार करने के लिए अक्सर ब्लूम के वर्गीकरण का उपयोग किया जाता है।

अतिरिक्त जानकारी:

- शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण शिक्षकों के प्रभुत्व को कम करते हैं और छात्रों की स्वायत्तता को प्रोत्साहित करते हैं।
 - प्रोग्राम्ड इंस्ट्रक्शन को अक्सर बी.एफ. स्किनर के सुदृढीकरण के सिद्धांतों से जोड़ा जाता है।
- ब्लूम के वर्गीकरण में संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरक क्षेत्र शामिल हैं।

Q7

गैंग्रे के निर्देश के नौ चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:

ए. सीखने संबंधी मार्गदर्शन प्रदान करें

बी. ध्यान आकर्षित करना

सी. प्रदर्शन का आकलन करें

डी. उत्तेजना सामग्री प्रस्तुत करें

ई. प्रतिधारण और स्थानांतरण को बढ़ाना

विकल्प:

(a) बी, डी, ए, सी, ई

(b) डी, बी, ए, सी, ई

(c) बी, ए, डी, सी, ई

(d) बी, डी, सी, ए, ई

उत्तर:

ए

सूरज:

सही विकल्प - (a)

परिचय: गैंग्रे के निर्देश के नौ चरण प्रभावी अधिगम के लिए एक व्यवस्थित निर्देशात्मक ढांचा प्रदान करते हैं।

सूचना संवर्धक: सही क्रम:

1. ध्यान आकर्षित करना (बी) - शिक्षार्थियों की रुचि जगाना।
2. उत्तेजक सामग्री प्रस्तुत करें (डी) - नई सामग्री या कौशल प्रदान करें।
3. सीखने का मार्गदर्शन प्रदान करें (ए) - रणनीतियाँ, संकेत और उदाहरण प्रस्तुत करें।
4. प्रदर्शन का आकलन करें (सी) - शिक्षार्थी की समझ का परीक्षण करें।
5. प्रतिधारण और स्थानांतरण को बढ़ाएं (ई) - नए संदर्भों में सीखने को लागू करने के अवसर प्रदान करें।

अतिरिक्त जानकारी:

इन चरणों से पहले "शिक्षार्थियों को उद्देश्यों के बारे में सूचित करना" और "पूर्व में सीखी गई बातों को याद करने के लिए प्रेरित करना" जैसे चरण शामिल हैं।

• गैंग्रे के मॉडल का उपयोग निर्देशात्मक डिजाइन, विशेष रूप से ई-लर्निंग में बड़े पैमाने पर किया जाता है।

Q8

निम्नलिखित में से कौन-सी ह्यूटागॉजी की विशेषताएं नहीं हैं?

- (ए) शिक्षक-केंद्रित निर्णय लेना
 - (बी) स्व-निर्धारित अधिगम पर जोर
 - (सी) रेखिक पाठ्यक्रम वितरण
 - (डी) केवल योग्यता के बजाय क्षमता पर ध्यान केंद्रित करें
- नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल (ख)
- (b) (ख) और (ग) केवल
- (c) (क) और (ग) केवल
- (d) (ख) और (घ) केवल

उत्तर:

सी

सूरज:

सही विकल्प - (c)

परिचय:

ह्यूटागॉजी एक स्व-निर्धारित शिक्षण पद्धति है जो शिक्षार्थी की स्वायत्तता और क्षमता पर जोर देती है।

सूचना संवर्धक:

• विशेषताएं नहीं:

- (ए) शिक्षक-केंद्रित निर्णय लेना → ह्यूटागोजी के विपरीत, जो शिक्षार्थी-संचालित है।
- (सी) रेखीय पाठ्यक्रम वितरण → ह्यूटागोजी लचीले, गैर-रेखीय पथों की अनुमति देता है।

• ARE की विशेषताएं:

(ख) स्व-निर्धारित अधिगम, ह्यूटागॉजी का मूल है।

(घ) क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता है - योग्यता से परे अनुकूलनशीलता और समस्या-समाधान कौशल।

अतिरिक्त जानकारी:

• स्टीवर्ट हेस और क्रिस केन्योन द्वारा विकसित (2000)।

इसे शिक्षार्थी के और भी अधिक नियंत्रण की दिशा में वयस्क शिक्षा (स्व-निर्देशित अधिगम) का एक विकसित रूप माना जाता है।

Q9

निम्नलिखित प्रकार के मूल्यांकनों को उस क्रम में व्यवस्थित करें जिस क्रम में वे सामान्यतः शिक्षण प्रक्रिया के दौरान घटित होते हैं:

- ए. सारांश मूल्यांकन
- बी. नैदानिक मूल्यांकन
- सी. रचनात्मक मूल्यांकन
- डी. प्लेसमेंट मूल्यांकन

विकल्प:

- (a) डी, बी, सी, ए
(b) बी, डी, सी, ए
(c) डी, सी, बी, ए
(d) बी, सी, डी, ए

उत्तर:

ए

सूरज:

सही विकल्प - (a)

परिचय: शिक्षा में मूल्यांकन विभिन्न चरणों में होता है, जिनमें से प्रत्येक का विशिष्ट उद्देश्य होता है - प्रारंभिक तत्परता का आकलन करने से लेकर अंतिम अधिगम परिणामों तक।

सूचना संवर्धक: सही क्रम:

1. प्लेसमेंट मूल्यांकन (डी) - शिक्षार्थियों के प्रवेश स्तर को निर्धारित करने के लिए प्रारंभ में आयोजित किया जाता है।
2. नैदानिक मूल्यांकन (बी) - विशिष्ट कमजोरियों और सीखने की कठिनाइयों की पहचान करता है।
3. रचनात्मक मूल्यांकन (सी) - सुधार के लिए शिक्षण के दौरान चल रही जाँच।
4. योगात्मक मूल्यांकन (ए) - शिक्षण के अंत में अधिगम का अंतिम मूल्यांकन।

अतिरिक्त जानकारी:

- प्लेसमेंट मूल्यांकन सही पाठ्यक्रम आवंटन सुनिश्चित करता है।
- रचनात्मक मूल्यांकन निरंतर प्रतिक्रिया मॉडल के अनुरूप है।
- योगात्मक मूल्यांकन में अंतिम परीक्षाएं, परियोजनाएं आदि शामिल हैं।

Q10

सूची-I (शिक्षण विधियाँ) का सूची-II (मुख्य विशेषताएँ) से मिलान करें:

सूची - I

सूची - II

ए. प्रोग्राम्ड लर्निंग

I. प्रत्येक चरण के बाद तत्काल प्रतिक्रिया

बी. व्याख्यान विधि

II. शिक्षक बोलते हैं; छात्र सुनते हैं।

सी. विचार-मंथन

III. अनेक विचारों का तीव्र सृजन

डी. प्रदर्शन विधि

IV. किसी प्रक्रिया को वास्तविक समय में दिखाना और समझाना

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) A-I, B-II, C-III, D-IV
- (b) A-III, B-I, C-II, D-IV
- (c) A-I, B-III, C-IV, D-II
- (d) A-II, B-I, C-III, D-IV

उत्तर:

ए

सूरज:

सही विकल्प - (a)

परिचय: शिक्षण विधियों को उनकी परिभाषित विशेषताओं से मिलाना शिक्षक की शिक्षाशास्त्र की समझ का परीक्षण करता है।

सूचना संवर्धक:

- ए-आई: प्रोग्राम्ड लर्निंग सीखने को सुदृढ़ करने के लिए प्रत्येक चरण के बाद तत्काल प्रतिक्रिया प्रदान करती है।
- बी-II: व्याख्यान विधि मुख्य रूप से एकतरफा संचार है जहां शिक्षक बोलता है और छात्र सुनते हैं।
- सी-III: ब्रेनस्टॉर्मिंग आलोचना के बिना विविध विचारों की तीव्र उत्पत्ति को प्रोत्साहित करती है।
- डी-IV: प्रदर्शन विधि में वास्तविक समय में एक प्रक्रिया को दिखाना और समझाना शामिल है।

अतिरिक्त जानकारी:

- प्रोग्राम्ड लर्निंग अक्सर रैखिक या शाखाओं वाले ढाँचे में दी जाती है।
- रचनात्मक समस्या-समाधान सत्रों में ब्रेनस्टॉर्मिंग का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
- विज्ञान प्रयोगशालाओं और तकनीकी प्रशिक्षण जैसे कौशल-आधारित विषयों के लिए प्रदर्शन प्रभावी होते हैं।

Q11

निम्नलिखित में से कौन सा कथन इंटरनेट और एक्स्ट्रानेट के बीच के अंतर को सबसे सटीक रूप से बताता है?

- (a) इंटरनेट एक ऐसा नेटवर्क है जिसका उपयोग निजी कंपनी के भीतर संचार के लिए किया जाता है, जबकि एक्स्ट्रानेट एक सार्वजनिक नेटवर्क है।
- (b) इंटरनेट एक निजी नेटवर्क है, जबकि एक्स्ट्रानेट एक सार्वजनिक नेटवर्क है।
- (c) दोनों ही निजी नेटवर्क हैं, लेकिन इंटरनेट आंतरिक उपयोग के लिए होता है, जबकि एक्स्ट्रानेट सीमित बाहरी उपयोग की अनुमति देता है।
- (d) इंटरनेट एक वाइड एरिया नेटवर्क (WAN) है, जबकि एक्स्ट्रानेट एक लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) है।

उत्तर:

सी

सूरज:

सही विकल्प - (c)

परिचय

यह प्रश्न नेटवर्क की दो प्रमुख अवधारणाओं के बीच अंतर करने की आपकी क्षमता का परीक्षण करता है, जिन्हें अक्सर एक दूसरे से भ्रमित किया जाता है। मुख्य अंतर नेटवर्क तक पहुंच के स्तर और नेटवर्क का उपयोग करने की अनुमति किसे है, इस पर आधारित है।

सूचना बूस्टर

इंट्रानेट एक निजी नेटवर्क है जो केवल संगठन के आंतरिक कर्मचारियों के लिए ही सुलभ होता है। यह आंतरिक रूप से सूचना और संसाधनों को साझा करने के लिए इंटरनेट-आधारित तकनीक (जैसे वेब ब्राउज़र और TCP/IP) का उपयोग करता है। यह फ़ायरवॉल द्वारा सुरक्षित होता है और आम जनता के लिए सुलभ नहीं होता है।

एक्सट्रानेट भी एक निजी नेटवर्क होता है, लेकिन यह इंट्रानेट का विस्तार है जो साझेदारों, आपूर्तिकर्ताओं या ग्राहकों जैसे विशिष्ट बाहरी पक्षों को नियंत्रित पहुंच प्रदान करता है। यह सुरक्षित प्रोटोकॉल का उपयोग करके इन बाहरी उपयोगकर्ताओं को आंतरिक नेटवर्क के डेटा और अनुप्रयोगों के कुछ हिस्सों तक पहुंच प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, कोई कंपनी अपने आपूर्तिकर्ताओं को इन्वेंट्री स्तर की जांच करने की अनुमति देने के लिए एक्सट्रानेट का उपयोग कर सकती है।

अतिरिक्त ज्ञान

इन दोनों के बीच अंतर को याद रखने का मुख्य तरीका है उपसर्ग: "इंट्रा-" का अर्थ है अंदर, और "एक्स्ट्रा-" का अर्थ है बाहर। ये दोनों ही सार्वजनिक इंटरनेट की तुलना में अधिक सुरक्षित और गोपनीय हैं। एक्सट्रानेट का उपयोग बी2बी (बिजनेस-टू-बिजनेस) संचार का एक रूप है।

Q12

निम्नलिखित आईसीटी खतरों का उनके प्राथमिक आक्रमण विधि से मिलान करें:

सूची-I (खतरा)

सूची-II (हमला विधि)

ए. एसक्यूएल इंजेक्शन

1. किसी सिस्टम को अत्यधिक ट्रैफिक से भरकर उसे अनुपलब्ध कर देना।

बी. सेवा से इनकार (डीओएस) 2. किसी वेबसाइट के इनपुट फॉर्म का दुरुपयोग करके डेटाबेस तक पहुंच प्राप्त करना।

सी. मध्यमार्गी व्यक्ति 3. दो पक्षों के बीच संचार को रोकना।

सही विकल्प चुनें:

- (a) ए-2, बी-1, सी-3
- (b) ए-1, बी-2, सी-3
- (c) ए-3, बी-1, सी-2
- (d) ए-2, बी-3, सी-1

उत्तर:

ए

सूरज:

सही विकल्प - (a)

परिचय

यह प्रश्न नेटवर्क सेवाओं और वेब अनुप्रयोगों को लक्षित करने वाले उन्नत आईसीटी सुरक्षा खतरों के बारे में आपके ज्ञान का परीक्षण करता है। ये हमले साधारण मैलवेयर से कहीं अधिक जटिल होते हैं और सिस्टम में मौजूद विशिष्ट कमजोरियों का फायदा उठाते हैं।

सूचना बूस्टर

• ए. एसक्यूएल इंजेक्शन (2): यह डेटाबेस-आधारित वेबसाइटों को निशाना बनाने वाला एक प्रकार का हमला है। एक हैकर वेब फॉर्म के इनपुट फ़ील्ड में दुर्भावनापूर्ण एसक्यूएल (स्ट्रक्चर्ड क्वेरी लैंग्वेज) कोड डालता है। जब वेबसाइट इस इनपुट को प्रोसेस करती है, तो कोड निष्पादित होता है, जिससे हमलावर को डेटाबेस की जानकारी, जैसे उपयोगकर्ता सूचियाँ या गोपनीय डेटा तक अनधिकृत पहुँच प्राप्त हो जाती है।

• बी. सेवा से इनकार (डीओएस) (1): डीओएस हमला एक दुर्भावनापूर्ण प्रयास है जिसका उद्देश्य लक्षित सर्वर, सेवा या नेटवर्क के सामान्य यातायात को बाधित करना है, जिसमें इंटरनेट यातायात की बाढ़ लाकर उसे अवरुद्ध कर दिया जाता है। इससे वैध उपयोगकर्ता सेवा तक पहुँचने में असमर्थ हो जाते हैं। वितरित सेवा से इनकार (डीडीओएस) हमले में कई समझौता किए गए कंप्यूटर सिस्टम का उपयोग किया जाता है, जिससे इसे रोकना कठिन हो जाता है।

• सी. मैन-इन-द-मिडल (3): मैन-इन-द-मिडल (एमआईटीएम) हमले में, हमलावर गुप्त रूप से उन दो पक्षों के बीच संदेशों को रोकता और आगे भेजता है जो मानते हैं कि वे एक-दूसरे से सीधे संवाद कर रहे हैं। इससे हमलावर को बातचीत को सुनने या भेजे जा रहे डेटा को बदलने की अनुमति मिल जाती है, अक्सर दोनों पक्षों की जानकारी के बिना।

अतिरिक्त ज्ञान

ये हमले सुरक्षा प्रोटोकॉल और प्रक्रियाओं के महत्व को उजागर करते हैं। उचित इनपुट सत्यापन और पैरामीटराइज्ड क्वेरी के उपयोग से SQL इंजेक्शन को रोका जा सकता है। नेटवर्क सुरक्षा उपायों और विशेष सेवाओं के माध्यम से DoS हमलों को कम किया जा सकता है। HTTPS और SSL/TLS जैसे एन्क्रिप्शन प्रोटोकॉल का उपयोग करके MitM हमलों को रोका जा सकता है।

Q13

साइबर सुरक्षा खतरों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे सटीक है?

- (a) ट्रोजन एक ऐसा प्रोग्राम है जो उपयोगकर्ता के हस्तक्षेप के बिना ही स्वयं को दोहराता है।
- (b) वर्म एक प्रकार का मैलवेयर है जो खुद को एक वैध एप्लिकेशन के रूप में छुपा लेता है।
- (c) फिशिंग एक ऐसी तकनीक है जिसमें ईमेल का उपयोग करके उपयोगकर्ताओं को व्यक्तिगत जानकारी प्रकट करने के लिए बरगलाया जाता है।
- (d) स्पाइवेयर एक प्रकार का रैंसमवेयर है जो उपयोगकर्ता की फाइलों को एन्क्रिप्ट करता है और फिरौती की मांग करता है।

उत्तर:

सी

सूरज:

सही विकल्प - (c)

परिचय

यह प्रश्न साइबर सुरक्षा से जुड़े आम खतरों और उनकी विशिष्ट, अक्सर भ्रमित करने वाली विशेषताओं के बारे में आपके ज्ञान का परीक्षण करता है। आधुनिक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) सुरक्षा की व्यापक समझ के लिए प्रत्येक खतरे की कार्यप्रणाली की सटीक जानकारी होना आवश्यक है।

सूचना बूस्टर

• (ग) फिशिंग: यह सही परिभाषा है। फिशिंग एक सामाजिक इंजीनियरिंग तकनीक है जिसमें हमलावर फर्जी ईमेल भेजता है जो किसी वैध स्रोत (जैसे, बैंक या सोशल मीडिया कंपनी) से आए हुए प्रतीत होते हैं, ताकि प्राप्तकर्ता को किसी दुर्भावनापूर्ण लिंक पर क्लिक करने या पासवर्ड या क्रेडिट कार्ड नंबर जैसी संवेदनशील जानकारी प्रकट करने के लिए बरगलाया जा सके।

• अन्य विकल्प गलत क्यों हैं:

• (a) ट्रोजन: ट्रोजन (या ट्रोजन हॉर्स) एक प्रकार का मैलवेयर है जो उपयोगकर्ता को डाउनलोड और चलाने के लिए बरगलाने के उद्देश्य से खुद को वैध एप्लिकेशन के रूप में छुपा लेता है। ट्रोजन स्वयं को नहीं दोहराते। वर्म ही वे मैलवेयर हैं जो स्वयं को दोहराते हैं और नेटवर्क पर स्वतंत्र रूप से फैलते हैं।

(ख) वर्म: वर्म एक स्व-प्रतिकृति प्रोग्राम है जो मानवीय सहायता के बिना अन्य कंप्यूटरों में फैल सकता है। यह कंप्यूटर सिस्टम में मौजूद कमजोरियों का फायदा उठाता है।

(घ) स्पाइवेयर: स्पाइवेयर एक प्रकार का मैलवेयर है जिसे उपयोगकर्ता की जानकारी के बिना, गुप्त रूप से उनकी कंप्यूटर गतिविधियों और उनके बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह कीबोर्ड पर टाइप किए गए टाइप, ब्राउज़िंग इतिहास और अन्य गतिविधियों पर नज़र रखता है। फ़ाइलों को एन्क्रिप्ट करने और फिरौती मांगने वाले मैलवेयर को रैंसमवेयर कहा जाता है।

अतिरिक्त ज्ञान

"मैलवेयर" शब्द दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर के लिए एक व्यापक शब्द है। इस श्रेणी में, विभिन्न खतरों को उनके कार्य करने के तरीके के आधार पर परिभाषित किया जाता है। वर्म का प्राथमिक लक्ष्य स्वयं को फैलाना होता है, जबकि ट्रोजन का लक्ष्य उपयोगकर्ता को

धोखा देकर उसे लॉन्च करवाना होता है। "सोशल इंजीनियरिंग" शब्द भी महत्वपूर्ण है, जो लोगों को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करके उनसे कोई कार्य करवाने या गोपनीय जानकारी निकलवाने को संदर्भित करता है।

Q14

निम्नलिखित कंप्यूटरों की पीढ़ियों का मिलान उनमें प्रयुक्त मुख्य तकनीक से करें:

सूची-I (पीढ़ी)

सूची-II (मुख्य प्रौद्योगिकी)

ए. पहली पीढ़ी

1. एकीकृत परिपथ (आईसी)

बी. दूसरी पीढ़ी

2. ट्रांजिस्टर

सी. तीसरी पीढ़ी

3. माइक्रोप्रोसेसर

डी. चौथी पीढ़ी

4. वैक्यूम ट्यूब

सही विकल्प चुनें:

(a) ए-4, बी-2, सी-1, डी-3

(b) ए-1, बी-2, सी-3, डी-4

(c) ए-2, बी-4, सी-3, डी-1

(d) ए-4, बी-3, सी-1, डी-2

उत्तर:

ए

सूरज:

सही विकल्प - (a)

परिचय

यह प्रश्न कंप्यूटिंग के मूलभूत इतिहास का तथ्यात्मक परीक्षण है। आधुनिक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के विकास को समझने के लिए कंप्यूटर प्रौद्योगिकी में पीढ़ीगत परिवर्तनों को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक पीढ़ी एक प्रमुख तकनीकी प्रगति द्वारा परिभाषित होती है जिसने कंप्यूटरों को छोटा, तेज और अधिक कुशल बनाया।

सूचना बूस्टर

- ए. पहली पीढ़ी (1940-1950 का दशक) - 4. वैक्यूम ट्यूब: ये कंप्यूटर विशाल, धीमे और महंगे थे। इनमें सर्किट के लिए हजारों वैक्यूम ट्यूब और मेमोरी के लिए चुंबकीय ड्रम का उपयोग किया जाता था। ये बहुत अधिक गर्मी उत्पन्न करते थे और बड़ी मात्रा में बिजली की खपत करते थे। उदाहरणों में एनियाक और यूनिवैक शामिल हैं।
- बी. दूसरी पीढ़ी (1950-1960 का दशक) - 2. ट्रांजिस्टर: ट्रांजिस्टर के आविष्कार ने कंप्यूटिंग में क्रांति ला दी। ट्रांजिस्टर वैक्यूम ट्यूबों की तुलना में काफी छोटे, सस्ते, अधिक विश्वसनीय और कम बिजली खपत करने वाले थे। इससे अधिक कॉम्पैक्ट और शक्तिशाली कंप्यूटरों का विकास हुआ।
- सी. तीसरी पीढ़ी (1960-1970 का दशक) - 1. एकीकृत परिपथ (आईसी): आईसी, या माइक्रोचिप, ने ट्रांजिस्टर और अन्य घटकों के समूह को एक छोटे सिलिकॉन चिप पर एकीकृत कर दिया। इससे आकार और लागत में और कमी आई, जबकि गति और दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यह पहले मिनीकंप्यूटरों का युग था।
- चौथी पीढ़ी (1970 का दशक-वर्तमान) - 3. माइक्रोप्रोसेसर: माइक्रोप्रोसेसर के आविष्कार ने, जिसने सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (सीपीयू) के सभी घटकों को एक ही आईसी पर स्थापित कर दिया, पर्सनल कंप्यूटर (पीसी) क्रांति की शुरुआत की। इस पीढ़ी ने शक्तिशाली डेस्कटॉप, लैपटॉप और मोबाइल उपकरणों के विकास को जन्म दिया है।

अतिरिक्त ज्ञान

कंप्यूटरों की पांचवीं पीढ़ी भविष्य की प्रौद्योगिकियों पर आधारित एक अवधारणा है, जिसका लक्ष्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का उपयोग करने वाले कंप्यूटर बनाना है। इन कंप्यूटरों में मनुष्यों की तरह सोचने, तर्क करने और सीखने की क्षमता होनी चाहिए। यह शोध क्षेत्र अभी प्रारंभिक अवस्था में है, लेकिन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के भविष्य के लिए इसमें अपार संभावनाएं हैं।

Q15

हेक्साडेसिमल संख्या 3D निम्नलिखित में से किस दशमलव मान के समतुल्य है?

- (a) 61
- (b) 51
- (c) 75
- (d) 110

उत्तर:

ए

सूरज:

सही विकल्प - (a)

परिचय

यह प्रश्न सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के एक मूलभूत कौशल का परीक्षण करता है: विभिन्न संख्या प्रणालियों के बीच रूपांतरण। हेक्साडेसिमल (आधार -16) कंप्यूटिंग में उपयोग की जाने वाली एक सामान्य संख्या प्रणाली है, इसलिए इसे दशमलव प्रणाली (आधार -10) में परिवर्तित करना समझना आवश्यक है।

सूचना बूस्टर

किसी हेक्साडेसिमल संख्या को दशमलव संख्या में परिवर्तित करने के लिए, आपको यह याद रखना होगा कि हेक्साडेसिमल संख्या में प्रत्येक स्थान 16 की घात को दर्शाता है।

1. हेक्साडेसिमल संख्या 3D है।
2. सबसे दाहिना अंक, D, 160 के स्थान पर है। हेक्साडेसिमल में, D दशमलव संख्या 13 के बराबर है। इसलिए, इसका मान $13 \times 160 = 13 \times 1 = 13$ है।
3. बाईं ओर अगला अंक, 3, 161 के स्थान पर है। इसका मान $3 \times 161 = 3 \times 16 = 48$ है।
4. अंतिम दशमलव मान प्राप्त करने के लिए, आप प्रत्येक स्थान से मानों को जोड़ते हैं: $48 + 13 = 61$ ।

अतिरिक्त ज्ञान

कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक्स में हेक्साडेसिमल का अक्सर उपयोग किया जाता है क्योंकि यह बाइनरी संख्याओं का अधिक संक्षिप्त निरूपण प्रदान करता है। प्रत्येक हेक्साडेसिमल अंक चार बाइनरी अंकों (बिट्स) का प्रतिनिधित्व कर सकता है, जिससे बाइनरी कोड की लंबी स्ट्रिंग को पढ़ना और लिखना आसान हो जाता है। उदाहरण के लिए, हेक्साडेसिमल अंक F बाइनरी मान 1111 के समतुल्य है।

Q16

निम्नलिखित चर प्रकारों को उनके सबसे उपयुक्त अनुसंधान प्रतिमान से मिलाएँ:

सूची-I (चर प्रकार)

सूची-II (सबसे उपयुक्त प्रतिमान)

ए. डमी चर

1. गुणात्मक अनुसंधान

बी. अव्यक्त चर

2. मात्रात्मक अनुसंधान

सी. विषयगत चर

3. मिश्रित विधि अनुसंधान

सही विकल्प चुनें:

- (a) ए-2, बी-1, सी-3
- (b) ए-2, बी-3, सी-1
- (c) ए-1, बी-2, सी-3
- (d) ए-3, बी-1, सी-2

उत्तर: बी

सूरज:

परिचय:

किसी अध्ययन के लिए सही कार्यप्रणाली का चयन करने हेतु चर प्रकारों और अनुसंधान प्रतिमानों के बीच संबंध को पहचानना आवश्यक है। प्रत्येक चर प्रकार अपने संबंधित ढांचे के भीतर एक विशिष्ट कार्य करता है, जो विशुद्ध रूप से संख्यात्मक से लेकर अत्यधिक वैचारिक तक हो सकता है।

मानक कार्यप्रणालीगत पद्धतियों के आधार पर, सही मिलान इस प्रकार है:

सूचना संवर्धक:

मिलान इस बात पर निर्भर करता है कि शोध प्रक्रिया के भीतर प्रत्येक चर को कैसे परिभाषित और उपयोग किया जाता है:

सूची-I (चरसूची-II (सबसे
प्रकार) उपयुक्त प्रतिमान)

ए. डमी चर 2. मात्रात्मक
अनुसंधान

बी. अव्यक्त 3. मिश्रित विधि
चर अनुसंधान

सी. 1. गुणात्मक
विषयगत अनुसंधान
चर



- डमी वेरिएबल (मात्रात्मक): ये श्रेणीबद्ध डेटा को दर्शाने के लिए प्रतिगमन विश्लेषण में उपयोग किए जाने वाले संख्यात्मक "प्रतिनिधि" होते हैं। इनका मान आमतौर पर 0 या 1 होता है (उदाहरण के लिए, "उपचारित समूह" के लिए 1 और "नियंत्रण समूह" के लिए 0)।
- विषयगत चर (गुणात्मक): ये संख्यात्मक नहीं होते, बल्कि गुणात्मक डेटा (जैसे साक्षात्कार या फोकस समूह) में पहचाने गए पैटर्न या "विषय" होते हैं। ये विषयगत विश्लेषण के माध्यम से निकाले गए मूल अवधारणाओं को दर्शाते हैं।
- अव्यक्त चर (मिश्रित विधियाँ): उन्नत मात्रात्मक मॉडलिंग (जैसे संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग) में अक्सर उपयोग किए जाने वाले अव्यक्त चर उन "छिपे हुए" निर्माणों (जैसे, खुशी, बुद्धिमत्ता) का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से मापा नहीं जा सकता। चूंकि इनमें एक वैचारिक परिभाषा (अक्सर गुणात्मक रूप से व्युत्पन्न) और संख्यात्मक संकेतक (मात्रात्मक रूप से मापा गया) दोनों की आवश्यकता होती है, इसलिए ये अक्सर मिश्रित विधियों के अध्ययनों में सेतु का काम करते हैं।

अतिरिक्त जानकारी:

इन चरों की अपनी समझ को और गहरा करने के लिए, इनके विशिष्ट तकनीकी अनुप्रयोगों पर विचार करें:

- डमी वेरिएबल ट्रेप: मात्रात्मक अनुसंधान में, यदि आपके पास n श्रेणियां हैं, तो आपको पूर्ण मल्टीकोलिनियरिटी से बचने के लिए केवल $n-1$ डमी वेरिएबल का उपयोग करना चाहिए, जहां वेरिएबल अनावश्यक जानकारी प्रदान करते हैं जो सांख्यिकीय मॉडल को विफल कर देती है।
- विषयगत चरों में आत्म-चिंतनशीलता: मात्रात्मक चरों के विपरीत, विषयगत चर शोधकर्ता के दृष्टिकोण से प्रभावित होते हैं। गुणात्मक अनुसंधान में, शोधकर्ता को "आत्म-चिंतनशीलता" का अभ्यास करना चाहिए, यह स्वीकार करते हुए कि उनके अपने पूर्वाग्रह उनके द्वारा पहचाने गए "विषयों" को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।
- संरचनात्मक वैधता: अव्यक्त चर अक्सर "संरचनाओं" के पर्यायवाची होते हैं। यह सुनिश्चित करना कि आपके अवलोकन योग्य माप वास्तव में छिपे हुए अव्यक्त चर का प्रतिनिधित्व करते हैं, संरचनात्मक वैधता स्थापित करने की प्रक्रिया कहलाती है।
- त्रिकोणीकरण: मिश्रित विधि अनुसंधान में अक्सर "त्रिकोणीकरण" करने के लिए अव्यक्त चर का उपयोग किया जाता है - गुणात्मक निष्कर्षों की तुलना मात्रात्मक डेटा से की जाती है ताकि यह देखा जा सके कि क्या वे दोनों एक ही अंतर्निहित "छिपी हुई" वास्तविकता की ओर इशारा करते हैं।

Q17

प्रत्यक्षवाद से उत्तर-प्रत्यक्षवाद की ओर प्राथमिक तात्विक परिवर्तन निम्न से होता है:

- (a) व्यक्तिपरक वास्तविकता में विश्वास से वस्तुनिष्ठ वास्तविकता में विश्वास की ओर।
- (b) मात्रात्मक विधियों की अस्वीकृति से लेकर उनकी स्वीकृति तक।
- (c) एक पूर्णतः ज्ञेय और वस्तुनिष्ठ वास्तविकता से अपूर्णतः ज्ञेय, फिर भी वस्तुनिष्ठ वास्तविकता की ओर।
- (d) निगमनात्मक तर्क से आगमनात्मक तर्क के उपयोग की ओर।

उत्तर:

सी

सूरज:

सही विकल्प - (सी)।

परिचय

यह प्रश्न प्रत्यक्षवाद और उत्तर-प्रत्यक्षवाद के बीच एक महत्वपूर्ण दार्शनिक अंतर पर केंद्रित है: उनके सत्तामीमांसा संबंधी मान्यताओं की प्रकृति (अस्तित्व या वास्तविकता का अध्ययन)। इसके लिए यह समझना आवश्यक है कि बाद के प्रतिमान ने पहले वाले प्रतिमान को किस प्रकार परिष्कृत किया।

सूचना बूस्टर

• सत्तामीमांसा वास्तविकता की प्रकृति का दार्शनिक अध्ययन है। प्रत्यक्षवाद की सत्तामीमांसा एक एकल, वस्तुनिष्ठ वास्तविकता की है जिसे वैज्ञानिक नियमों द्वारा पूर्णतः समझा और वर्णित किया जा सकता है।

उत्तर-प्रत्यक्षवाद, वस्तुनिष्ठ वास्तविकता में विश्वास बनाए रखते हुए, इस महत्वपूर्ण सूक्ष्म अंतर को सामने लाता है कि इस वास्तविकता को पूर्ण निश्चितता के साथ नहीं जाना जा सकता। मानवीय अवलोकन, मापन उपकरण और दुनिया की जटिलता, ये सभी सीमाएँ और संभावित पूर्वाग्रह उत्पन्न करते हैं। इसलिए, उत्तर-प्रत्यक्षवाद की सत्तामीमांसा को एक वस्तुनिष्ठ लेकिन अपूर्ण रूप से ज्ञात वास्तविकता में विश्वास के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इससे संभाव्यता, पुनरावृत्ति और संभावित त्रुटि की स्वीकृति पर ध्यान केंद्रित हुआ।

(a) और (d) गलत हैं; दोनों अन्य भेदों के बारे में हैं। (b) गलत है, क्योंकि दोनों प्रतिमान मात्रात्मक विधियों का उपयोग करते हैं, हालांकि उत्तर-प्रत्यक्षवाद गुणात्मक विधियों को भी शामिल करता है।

अतिरिक्त ज्ञान

यह बदलाव महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने विज्ञान को पूर्ण सत्य की खोज से हटाकर अधिक व्यावहारिक और सटीक एवं विश्वसनीय ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर किया। यही कारण है कि उत्तर-प्रत्यक्षवादी शोध किसी अध्ययन की सीमाओं को स्वीकार करने और निष्कर्षों में विश्वास बढ़ाने के लिए त्रिकोणीकरण जैसी विधियों के उपयोग के महत्व पर बल देता है।

Q18

साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले उपकरणों को उनके कार्यों से मिलाएँ:

सूची 1

सूची 2



आई. टर्निटिन

ए. वेब सामग्री में साहित्यिक चोरी की जाँच पर ध्यान केंद्रित करता है

II. प्लैगस्कैन

बी. वैश्विक डेटाबेस के विरुद्ध लेखन में समानता का पता लगाता है

III. कॉपीस्केप C. व्याकरण, वर्तनी और साहित्यिक चोरी की त्रुटियों का पता लगाता है

IV. ग्रामरली डी. शैक्षणिक कार्यों में संभावित साहित्यिक चोरी की जाँच करता है

विकल्प: निम्नलिखित का मिलान करें

- (a) बी, द्वितीय-डी, तृतीय-ए, चतुर्थ-सी
- (b) ए, द्वितीय-बी, तृतीय-सी, चतुर्थ-डी
- (c) सी, द्वितीय-डी, तृतीय-बी, चतुर्थ-ए
- (d) डी, द्वितीय-ए, तृतीय-बी, चतुर्थ-सी

उत्तर:

ए

सूरज:

- टर्निटिन (आई-बी) का व्यापक रूप से शैक्षणिक परिवेश में उपयोग किया जाता है ताकि प्रस्तुत कार्य की तुलना शैक्षणिक लेखों, छात्र पत्रों और प्रकाशनों के वैश्विक डेटाबेस से करके लेखन में समानता का पता लगाया जा सके।
- प्लैगस्कैन (II-D) का उपयोग अकादमिक कार्यों में साहित्यिक चोरी का पता लगाने के लिए किया जाता है और यह शोध में मौलिकता सुनिश्चित करने के लिए दस्तावेज़ की डेटाबेस के विरुद्ध जाँच करता है।
- कॉपीस्केप (III-A) मुख्य रूप से वेब सामग्री में साहित्यिक चोरी की जाँच पर केंद्रित है, इंटरनेट पर उन उदाहरणों की खोज करता है जहाँ प्रस्तुत पाठ उचित उद्धरण के बिना ऑनलाइन दिखाई दे सकता है।
- ग्रामरली (IV-C) व्याकरण और वर्तनी की त्रुटियों का पता लगाने के लिए जाना जाता है, और लेखन में संभावित अनधिकृत सामग्री की पहचान करने के लिए साहित्यिक चोरी की जाँच भी प्रदान करता है।

सूचना संवर्धक:

- टर्निटिन और प्लैगस्कैन अकादमिक लेखन पर अधिक केंद्रित हैं, और टर्निटिन का उपयोग संस्थानों द्वारा छात्रों के असाइनमेंट में मौलिकता सुनिश्चित करने के लिए भी किया जाता है।
- ग्रामरली एक बहुमुखी उपकरण है जो व्याकरण, शैली और साहित्यिक चोरी का पता लगाने सहित व्यापक लेखन सहायता प्रदान करता है, और इसका व्यापक रूप से पेशेवरों और छात्रों द्वारा समान रूप से उपयोग किया जाता है।
- कॉपीस्केप का उपयोग मुख्य रूप से वेब सामग्री के लिए किया जाता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि डिजिटल सामग्री अद्वितीय है और मौजूदा ऑनलाइन स्रोतों से कॉपी नहीं की गई है।

अतिरिक्त जानकारी:

- सुव्यवस्थित सबमिशन और साहित्यिक चोरी की जाँच के लिए टर्निटिन को अक्सर मूडल और ब्लैकबोर्ड जैसे लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एलएमएस) के साथ एकीकृत किया जाता है।

- Plagscan शैक्षणिक संस्थानों के लिए उपयोगी है और Moodle और Canvas जैसी प्रणालियों के साथ एकीकरण की सुविधा भी प्रदान करता है।
- Copyscape वेबमास्टर्स और कंटेंट क्रिएटर्स के लिए वेबसाइटों, ब्लॉगों और डिजिटल प्रकाशनों पर कंटेंट की मौलिकता सुनिश्चित करने का एक लोकप्रिय टूल है।
- ग्रामरली प्रीमियम में अधिक विस्तृत साहित्यिक चोरी का पता लगाने की सेवा भी शामिल है, जो इसे उन कंटेंट क्रिएटर्स के लिए एक मूल्यवान उपकरण बनाती है जो लेखन में गुणवत्ता और मौलिकता पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

Q19

शोध नैतिकता में 'सूचित सहमति' की अवधारणा क्या है?

- (a) अध्ययन में भाग लेने वाले व्यक्ति की सहमति प्राप्त करने से पहले शोधकर्ताओं को अध्ययन के निष्कर्षों के बारे में सूचित किया जाना चाहिए।
- (b) अध्ययन में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को इसमें शामिल जोखिमों की पूरी जानकारी होने के बावजूद स्वेच्छा से अध्ययन के लिए सहमत होना होगा।
- (c) शोधकर्ताओं को अपने निष्कर्षों को प्रकाशित करने से पहले अपने सहयोगियों से सहमति लेनी चाहिए।
- (d) शोध में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

उत्तर:

बी

सूरज:

सूचित सहमति का अर्थ है कि प्रतिभागियों को शोध की प्रकृति, संभावित जोखिमों और किसी भी समय वापस लेने के उनके अधिकार के बारे में पूरी जानकारी दी जाती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि वे स्वेच्छा से और जानकारी के साथ भाग लेते हैं।

सूचना संवर्धक:

- सूचित सहमति मानव अनुसंधान में नैतिकता का एक आधारशिला है।
- यह सुनिश्चित करता है कि प्रतिभागियों को अध्ययन के उद्देश्य, कार्यप्रणाली और इसमें शामिल किसी भी संभावित असुविधा या खतरे के बारे में जानकारी हो।

अतिरिक्त जानकारी:

- सूचित सहमति प्रपत्रों में गोपनीयता, अध्ययन का उद्देश्य और सहभागिता के लिए किसी भी प्रकार के मुआवजे के बारे में जानकारी शामिल होती है।
- नैतिक समीक्षा बोर्ड यह सुनिश्चित करते हैं कि शोधकर्ता इन दिशानिर्देशों का पालन करें।

Q20

हॉलीवुड अभिनेताओं को उनकी ऑस्कर विजेता भूमिकाओं में से किसी एक के साथ मिलाएं:

सूची-I (अभिनेता)

सूची-II (भूमिका)

ए. लियोनार्डो डिकैप्रियो 1. फॉरेस्ट गम्प

बी. टॉम हैंक्स 2. जोकर

सी. जोकिन फीनिक्स 3. ह्यू ग्लास

डी. मेरिल स्ट्रीप 4. मार्गरेट थैचर

(a) ए-3, बी-1, सी-2, डी-4

(b) ए-2, बी-3, सी-4, डी-1

(c) ए-4, बी-2, सी-3, डी-1

(d) ए-3, बी-4, सी-1, डी-2

उत्तर:

ए

सूरज:

सही विकल्प – (a)

परिचय: अभिनेता अक्सर पुरस्कार विजेता प्रदर्शनों के माध्यम से प्रतिष्ठित बन जाते हैं, जो उनके करियर को परिभाषित कर सकते हैं।

सूचना संवर्धक:

- लियोनार्डो डिकैप्रियो → ह्यू ग्लास भूत(2015)।
- टॉम हैंक्स → फॉरेस्ट गम्प (1994).
- जोकिन फीनिक्स → जोकर (2019).
- मेरिल स्ट्रीप → मार्गरेट थैचर लौह महिला(2011).

अतिरिक्त जानकारी:

कुछ अभिनेत्रियों ने कई ऑस्कर पुरस्कार जीते हैं, जैसे मेरिल स्ट्रीप।

ऑस्कर पुरस्कार अक्सर किसी अभिनेता के करियर को काफी बढ़ावा देते हैं।

Q21

"Phool Khile Hain Gulshan Gulshan" was...

- (a) एक कुकिंग शो
- (b) एक समाचार वृत्तचित्र
- (c) एक सेलिब्रिटी टॉक शो
- (d) एक संगीत प्रतियोगिता

उत्तर:

सी

सूरज:

सही विकल्प - (c)

परिचय: "फूल खिले हैं गुलशन गुलशन" दूरदर्शन के उन शुरुआती कार्यक्रमों में से एक था जिसमें मनोरंजन को मशहूर हस्तियों के विचारों के साथ मिलाया गया था।

सूचना संवर्धक:

• तबस्सुम द्वारा होस्ट किया गया यह कार्यक्रम 1972 से 1993 तक प्रसारित हुआ।

इसमें बॉलीवुड सितारों के साक्षात्कार शामिल थे।

• यह कार्यक्रम हर शुक्रवार की रात फिल्मों से पहले प्रसारित होता है।

अतिरिक्त जानकारी: इस शो ने भारतीय टेलीविजन पर सेलिब्रिटी साक्षात्कारों की नींव रखी।

Q22

इंटरनेट संचार की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- (ए) उप-मीडिया का अभाव
- (बी) मल्टी-डेटा नेटवर्किंग
- (सी) उच्च निष्ठा यथार्थवाद
- (डी) परिष्कृत पारस्परिकता
- (ई) गैर-अंतःक्रियात्मक

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) (A), (B) और (C) केवल
- (b) (B), (C) और (D) केवल
- (c) (सी), (डी) और (ई) केवल
- (d) (A), (D) और (E) केवल

उत्तर:

बी

सूरज:

इंटरनेट संचार की सही विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

(B) मल्टी-डेटा नेटवर्किंग: इंटरनेट मल्टी-डेटा नेटवर्किंग के माध्यम से विभिन्न प्रकार के डेटा (पाठ, ऑडियो, वीडियो, आदि) के एक साथ स्थानांतरण को सक्षम बनाता है।

(सी) उच्च निष्ठा यथार्थवाद: इंटरनेट एचडी वीडियो और इमर्सिव ग्राफिक्स जैसी उच्च गुणवत्ता वाली मल्टीमीडिया सामग्री के माध्यम से यथार्थवादी प्रस्तुतियों की अनुमति देता है।

(डी) परिष्कृत पारस्परिकता: इंटरनेट संचार उपयोगकर्ताओं के बीच इंटरैक्टिव और पारस्परिक आदान-प्रदान की विशेषता है, जैसे कि वास्तविक समय चैट, सोशल मीडिया इंटरैक्शन और सहयोगी उपकरण।

सूचना संवर्धक:

1. मल्टी-डेटा नेटवर्किंग: प्रभावी संचार के लिए मल्टीमीडिया सामग्री के एक साथ प्रसारण का समर्थन करता है।
2. उच्च गुणवत्ता वाला यथार्थवाद: उन्नत दृश्य और श्रव्य गुणवत्ता के साथ गहन उपयोगकर्ता अनुभव प्रदान करता है।
3. परिष्कृत पारस्परिकता: सोशल मीडिया, ईमेल और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म के माध्यम से वास्तविक समय की प्रतिक्रिया और सहयोग को बढ़ावा देता है।
4. उप-माध्यमों का एकीकरण: इंटरनेट एक मेटा-माध्यम के रूप में कार्य करता है, जो पाठ, ग्राफिक्स, ऑडियो और वीडियो को निर्बाध रूप से एकीकृत करता है।
5. अंतःक्रियाशीलता: इंटरनेट की एक प्रमुख विशेषता, जो दो-तरफा संचार और उपयोगकर्ता सहभागिता को सक्षम बनाती है।

अतिरिक्त जानकारी:

(ए) उप-मीडिया की अनुपस्थिति: यह गलत है क्योंकि इंटरनेट विभिन्न उप-मीडिया (जैसे, ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और एनीमेशन) को एक ही प्लेटफॉर्म में एकीकृत करता है।

(ई) गैर-अंतःक्रियात्मक: इंटरनेट स्वाभाविक रूप से अंतःक्रियात्मक है, जो उपयोगकर्ताओं को सामग्री और अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ गतिशील रूप से जुड़ने की अनुमति देता है।

Q23

पारस्परिक संचार _____ है।

(ए) प्रत्यक्ष आमने-सामने

(बी) लोगों के समूह के साथ

(सी) बड़ी संख्या में अज्ञात व्यक्तियों के साथ

(डी) दो व्यक्तियों के बीच

(ई) हमारे भीतर या आत्म-संचार

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) (ए) और (डी) केवल

(b) (ए) और (बी) केवल

(c) (सी) और (ए) केवल

(d) (D) और (E) केवल

उत्तर:

ए

सूरज:

अंतरव्यक्तिक संचार से तात्पर्य दो व्यक्तियों के बीच सूचना, भावनाओं और अर्थों के आदान-प्रदान से है, जो आमतौर पर आमने-सामने होता है। इसे दो व्यक्तियों के बीच प्रत्यक्ष संचार के रूप में सबसे सटीक रूप से वर्णित किया जा सकता है। इसलिए, विकल्प (A) "प्रत्यक्ष आमने-सामने" और (D) "दो व्यक्तियों के बीच" सही हैं।

सूचना संवर्धक:

- (a) पारस्परिक संचार प्रत्यक्ष होता है और आमतौर पर आमने-सामने बैठकर दो व्यक्तियों के बीच होता है।
(b) इस प्रकार के संचार में अक्सर व्यक्तिगत आदान-प्रदान शामिल होता है, जिसमें भावनाओं, विचारों और अवधारणाओं को वास्तविक समय में साझा किया जाता है।
(c) समूह संचार और अज्ञात व्यक्तियों के साथ संचार (जैसे प्रसारण) को अंतरव्यक्तिगत संचार के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जाता है।
(d) आत्म-संचार से तात्पर्य आंतरिक संवादों या विचारों से है और इसे आमतौर पर पारस्परिक संचार के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

Q24

सूची I का सूची II से मिलान करें

सूची I

सूची II

एशैनन और वीवर

मैं मतलबी दुनिया सिंड्रोम

बीजॉर्ज गोर्बनर

द्विशोर कम करना
ती
य

सिलासवेल

तु सामाजिक विरासत का संचरण
ती
य

डिजॉन फिशर

च संचरण संबंधी दृष्टिकोण की यांत्रिकी के रूप में
तु आलोचना की गई
र्थ

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) ए- I, बी- II, सी- III, डी- IV

(b) ए- III, बी-II, सी-I, डी-IV

(c) ए-II, बी-I, सी-III, डी-IV

(d) ए- I, बी- III, सी- II, डी- IV

उत्तर:

सी

सूरज:

ए-II (शैनन और वीवर - शोर कम करना): उनका मॉडल संचार चैनलों की तकनीकी दक्षता पर केंद्रित है, जिससे शोर (जैसे, टेलीफोन में स्टैटिक) को कम किया जा सके।

बी-आई (जॉर्ज गर्बनर - "मीन वर्ल्ड सिंड्रोम"): गर्बनर का संवर्धन सिद्धांत यह तर्क देता है कि भारी मात्रा में टीवी देखने वाले लोग दुनिया को अधिक हिंसक/खतरनाक मानते हैं।

सी-III (हेरोल्ड लासवेल - सामाजिक विरासत का प्रसारण): लासवेल का कार्यात्मक दृष्टिकोण सांस्कृतिक मूल्यों को पारित करने में मीडिया की भूमिका पर प्रकाश डालता है (जैसे, स्कूल, समाचार पत्र)।

डी-IV (जॉन फिस्के - प्रसारण दृष्टिकोण की आलोचना): फिस्के (सेमियोटिक्स स्कूल) ने यांत्रिक दृष्टिकोण को खारिज कर दिया, श्रोता व्याख्या और सांस्कृतिक अर्थ पर जोर दिया।

सूचना बूस्टर

शैनन और वीवर (ए) – शोर कम करना

फोकस: शैनन और वीवर का संचार का गणितीय मॉडल (1949) संचार के लिए एक तकनीकी/इंजीनियरिंग दृष्टिकोण है।

मुख्य अवधारणा: शोर कम करना – उनके मॉडल का उद्देश्य "शोर" (जैसे, फोन लाइनों में स्थैतिकता, रेडियो संकेतों में विकृतियाँ) को कम करके सिग्नल संचरण की दक्षता में सुधार करना है।

उनका काम बेल लैब्स में टेलीफोन और रेडियो संचार को अनुकूलित करने के लिए विकसित किया गया था।

इस मॉडल में प्रेषक → एनकोडर → चैनल → डिकोडर → रिसीवर शामिल हैं, जिसमें "शोर" एक बाधक कारक के रूप में कार्य करता है।

जॉर्ज गर्बनर (बी) – "मीन वर्ल्ड सिंड्रोम"

फोकस: गर्बनर का कल्टीवेशन थ्योरी इस बात की पड़ताल करता है कि टीवी किस प्रकार दर्शकों की वास्तविकता की धारणाओं को आकार देता है।

मुख्य अवधारणा: "क्रूर दुनिया सिंड्रोम" - टीवी के अत्यधिक दर्शक (विशेषकर हिंसक सामग्री वाले) दुनिया को वास्तविकता से कहीं अधिक खतरनाक मानते हैं।

गर्बनर ने तर्क दिया कि टीवी एक विकृत विश्वदृष्टि को बढ़ावा देता है, जिससे लोग अधिक भयभीत और निर्भर हो जाते हैं।

उदाहरण: अपराध पर आधारित शो दर्शकों को वास्तविक दुनिया की हिंसा का अतिरंजित आकलन करने के लिए प्रेरित करते हैं।

हेरोल्ड लासवेल (सी) – सामाजिक विरासत का संचरण

फोकस: लासवेल का कार्यात्मक दृष्टिकोण इस बात का अध्ययन करता है कि संचार सामाजिक व्यवस्था को कैसे बनाए रखता है।

मुख्य अवधारणा: सामाजिक विरासत का संचरण – मीडिया और संस्थाएं (स्कूल, परिवार) सांस्कृतिक मूल्यों और मानदंडों को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं।

लैसवेल द्वारा संचार के तीन कार्य:

निगरानी (पर्यावरण की निगरानी करना, उदाहरण के लिए, समाचार)।

सहसंबंध (घटनाओं की व्याख्या करना, उदाहरण के लिए, संपादकीय लेख)।

संचारण (सांस्कृतिक शिक्षा, उदाहरण के लिए, इतिहास के पाठ)।

उदाहरण: स्कूलों में राष्ट्रीय इतिहास इसलिए पढाया जाता है ताकि साझा पहचान की भावना पैदा हो सके।

जॉन फिस्के (डी) - संचरण दृष्टिकोण की यांत्रिकी के रूप में आलोचना की

फोकस: फिस्के सांस्कृतिक अध्ययन/सेमिओटिक स्कूल का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सरलीकृत संचरण मॉडलों की आलोचना करता है।

मुख्य अवधारणा: यांत्रिक मॉडलों की आलोचना - फिस्के ने तर्क दिया कि संचार केवल संकेतों का हस्तांतरण नहीं है, बल्कि इसमें अर्थ निर्माण और सांस्कृतिक व्याख्या भी शामिल है।

फिस्के ने श्रोता की सक्रियता (जिस प्रकार लोग संस्कृति के आधार पर संदेशों को अलग-अलग तरीके से समझते हैं) पर जोर दिया।

उदाहरण: किसी टीवी शो में दिखाई जाने वाली हिंसा को कुछ लोग "रोमांचक" मान सकते हैं, जबकि अन्य लोग "परेशान करने वाली" मान सकते हैं।

Q25

सूची-I का सूची-II से मिलान करें:

सूची-में

सूची द्वितीय

A. Asiddha

I. अप्रासंगिक मध्य अवधि

B. Badhita

II. अप्रमाणित मध्य अवधि

सी. विरुद्ध

III. विपरीत मध्य अवधि



डी. सव्याभिचरं IV. विरोधाभासी मध्य अवधि

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) ए-आई, बी-II, सी-III, डी-IV
- (b) ए-II, बी-IV, सी-III, डी-I
- (c) ए-II, बी-III, सी-I, डी-IV
- (d) ए-III, बी-IV, सी-II, डी-I

उत्तर:

बी

सूरज:

प्रस्तावना: यह प्रश्न भारतीय तर्कशास्त्र (न्याय दर्शन) में मध्य पद (हेत्वभाषा) की विशिष्ट भ्रान्तियों का उनके संबंधित विवरणों से मिलान करने के लिए कहता है। इन भ्रान्तियों को समझना अनुमानों की वैधता का मूल्यांकन करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सूचना संवर्धन: भारतीय तर्कशास्त्र में, एक वैध निष्कर्ष (अनुमान) के लिए एक सुदृढ़ मध्य पद (हेतु) आवश्यक है। हेत्वभाषा मध्य पद की एक भ्रान्ति है, जिसका अर्थ है कि मध्य पद वैध तर्क प्रतीत होता है लेकिन वास्तव में नहीं होता। हेत्वभाषा के पाँच मुख्य प्रकार हैं। आइए इनका मिलान करें:

• ए. असिद्ध (अपुष्ट/अस्थापित मध्य अवधि):

- विवरण: यह भ्रान्ति तब उत्पन्न होती है जब मध्य पद का अस्तित्व या उपस्थिति स्वयं सिद्ध नहीं होती या अप्रमाणित होती है। मध्य पद गौण पद में उपस्थित नहीं होता है।
- उदाहरण: "पहाड़ में आग है क्योंकि उसमें धुआँ नहीं निकलता।" यहाँ, "धुआँ रहित" (मध्यम पद) का पहाड़ (अल्प पद) में मौजूद होना सिद्ध नहीं हुआ है, यदि वास्तव में पहाड़ में धुआँ नहीं निकलता है। करता है धूम्रपान करना।

○ इसके साथ मेल खाता है: II. अप्रमाणित मध्य अवधि

• बी. बधिता (विरोधाभासी मध्य पद):

○ विवरण: यह भ्रान्ति तब उत्पन्न होती है जब मध्य पद को ज्ञान के किसी अन्य अधिक सशक्त स्रोत (जैसे, बोध, गवाही, या अन्य वैध निष्कर्ष) द्वारा खंडित किया जाता है। मुख्य पद को गौण पद में ज्ञान के किसी अन्य वैध स्रोत द्वारा खंडित किया जाता है।

○ उदाहरण: "आग ठंडी होती है, क्योंकि यह एक पदार्थ है।" यहाँ, "आग ठंडी होती है" यह निष्कर्ष हमारी धारणा से सीधे तौर पर विरोधाभासी है (हम आग को गर्म मानते हैं)।

○ इसके साथ मेल खाता है: IV. विरोधाभासी मध्य अवधि

• सी. विरुद्ध (विपरीत मध्य अवधि):

○ विवरण: यह भ्रान्ति तब उत्पन्न होती है जब मध्य पद, गौण पद में मुख्य पद की उपस्थिति को सिद्ध करने के बजाय, वास्तव में गौण पद की उपस्थिति को सिद्ध करता है। अनुपस्थितिप्रमुख शब्द का (या इच्छित बात के विपरीत स्थापित करता है)।

○ उदाहरण: "ध्वनि शाश्वत है, क्योंकि यह उत्पन्न होती है।" यहाँ, "उत्पन्न" (मध्य पद) यह सिद्ध करता है कि ध्वनि शाश्वत है। गैर अनन्तजो कि इच्छित निष्कर्ष ("शाश्वत") के बिल्कुल विपरीत है।

- इसके साथ मेल खाता है: III. विपरीत मध्य पद
 - डी. सव्यभिचारा (अनियमित/अस्पष्ट/अस्पष्ट मध्य अवधि):
 - विवरण: यह भ्रांति तब उत्पन्न होती है जब मध्य पद मुख्य पद से एकसमान रूप से संबंधित नहीं होता है। यह कुछ मामलों में मुख्य पद की उपस्थिति में भी मौजूद होती है, और कुछ मामलों में मुख्य पद की अनुपस्थिति में भी, जिससे निष्कर्ष अनिश्चित हो जाता है। इससे अनिश्चितता उत्पन्न होती है।
 - उदाहरण: "पहाड़ में आग है, क्योंकि उसमें धुआँ है।" (यदि "धुआँ" बिना आग के भी मौजूद हो सकता है, जैसे कि कोहरा, तो "धुआँ" शब्द असंगत होगा)। एक बेहतर उदाहरण: "पहाड़ में आग है, क्योंकि वह ज्ञात है।" "ज्ञात होना" अग्निमय और निर्जल दोनों चीजों में मौजूद है, जिससे यह निष्कर्षहीन हो जाता है।
 - इससे मेल खाता है: I. अप्रासंगिक मध्य पद (या अनिर्णायक मध्य पद)। "अप्रासंगिक" इस भाव को दर्शाता है कि यह लगातार मुख्य पद की ओर इशारा नहीं करता है।
- अतिरिक्त जानकारी: न्याय दर्शन में मध्य पद की एक अन्य प्रमुख भ्रांति सत्प्रतिपक्ष (अनुमानतः विरोधाभासी) है। यह तब होती है जब किसी निष्कर्ष का मध्य पद किसी अन्य मध्य पद द्वारा विरोधाभासी हो जाता है जो विपरीत निष्कर्ष स्थापित करता है। यह बधिता के समान है, लेकिन विरोधाभास प्रत्यक्ष अनुभव या ठोस ज्ञान से नहीं, बल्कि किसी अन्य निष्कर्ष से उत्पन्न होता है। तर्क में तार्किक कठोरता सुनिश्चित करने और गलत निष्कर्षों से बचने के लिए ये भ्रांतियाँ महत्वपूर्ण हैं।

Q26

निम्नलिखित में से कौन सा सव्यभिचार भ्रांति का प्रकार नहीं है?

- (a) साधारण (बहुत चौड़ा)
- (b) असाधारण (बहुत संकीर्ण)
- (c) अनुपसंहारिन (गैर-अनन्य)
- (d) व्याप्यत्वसिद्ध (सशर्त)

Ans.(a)

सूरज:

व्याप्यत्वसिद्ध एक अलग प्रकार की भ्रांति है जहाँ मध्य पद मुख्य पद के साथ आवश्यक अपरिवर्तनीय संबंध (व्याप्ति) स्थापित करने में विफल रहता है।

यह हेत्वाभास (भ्रामक तर्क) के अंतर्गत आता है, लेकिन सव्यभिचार से भिन्न है।

सूचना बूस्टर

सव्यभिचार (अनियमित मध्य पद की भ्रांति) तब उत्पन्न होती है जब हेतु (तर्क) साध्य (प्रमुख पद) के साथ सार्वभौमिक संबंध (व्याप्ति) स्थापित करने में विफल रहता है। इसके तीन उपप्रकार हैं:

ए) साधारण (बहुत व्यापक) – मध्य शब्द बहुत व्यापक है और यह समपक्ष (समान मामले) और विषमपक्ष (असमान मामले) दोनों पर लागू होता है।

उदाहरण: "सभी वस्तुएँ शाश्वत नहीं हैं क्योंकि वे ज्ञेय हैं।" (ज्ञेयता शाश्वत वस्तुओं, जैसे आत्मा, और शाश्वत वस्तुओं दोनों पर लागू होती है।)

बी) असाधारण (बहुत संकीर्ण) – मध्य पद पक्ष (विषय) के लिए अद्वितीय है और किसी अन्य मामले में प्रकट नहीं होता है।

उदाहरण: "ध्वनि शाश्वत है क्योंकि यह श्रव्य है।" (श्रव्यता केवल ध्वनि में होती है, अन्य शाश्वत या अशाश्वत वस्तुओं में नहीं।)

सी) अनुपसंहारिन (गैर-अनन्य) – मध्य पद पक्ष में मौजूद है लेकिन सपक्ष और विपक्ष दोनों में अनुपस्थित है।

उदाहरण: "सभी वस्तुएँ शाश्वत हैं क्योंकि उनका नामकरण किया जा सकता है।" (नामकरणशीलता कर्ता में मौजूद है, लेकिन यह शाश्वत और गैर-शाश्वत वस्तुओं के बीच अंतर करने में सहायक नहीं है।)

Q27

न्याय के अनुसार, करणा को इस नाम से भी जाना जाता है

- (a) Samavayi Karana
- (b) असाम्बयी करण
- (c) Nimitta Karana
- (d) Sahaj Karana

उत्तर:

सी

सूरज:

न्याय दर्शन में, कारण को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है:

- (a) समवायी कारण (अंतर्निहित कारण): भौतिक कारण (उदाहरण के लिए, कपड़े के लिए धागे)।
 - (b) असामवायी कारण (अंतर्निहित कारण): पदार्थ और उसके रूप के बीच का संबंध (उदाहरण के लिए, धागों की बुनाई)।
 - (c) निमित्त कारण (प्रभावी कारण): किसी प्रभाव का प्राथमिक कारक या तात्कालिक कारण (उदाहरण के लिए, कपड़ा बुनने वाला)।
- न्याय विद्या में "कारण" के लिए निमित्त कारण सबसे सामान्य शब्द है और यह इसके पर्यायवाची है। करणस्वयं।

Q28

जैन ज्ञानमीमांसा के प्रकाश में, मतिज्ञान किस विशेष क्रम में उत्पन्न होता है?

- (ए) धम्म
- (बी) में
- (सी) अवग्रह
- (डी) अपाया

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) (ए), (डी), (सी), (बी)
- (b) (डी), (सी), (बी), (ए)
- (c) (बी), (डी), (ए), (सी)
- (d) (सी), (बी), (डी), (ए)

Ans.(a)

सूरज:

जैन ज्ञानमीमांसा में, मतिज्ञान (इंद्रिय ज्ञान) एक विशिष्ट चार-चरणीय प्रक्रिया में उत्पन्न होता है:

- (a) अवग्रह (संवेदना/ग्रहण) → इंद्रियों के माध्यम से किसी वस्तु के साथ प्रारंभिक संपर्क। (प्रथम चरण)
- (b) इहा (जांच/अनुमान) → किसी वस्तु के बारे में अधिक जानने की जिज्ञासा या इच्छा। (द्वितीय चरण)

- (c) अपाय (निर्धारण/निर्णय) → विश्लेषण के आधार पर वस्तु की प्रकृति का निर्धारण करना। (तीसरा चरण)
(d) धमा (स्मरण/स्मृति) → भविष्य में याद करने के लिए ज्ञान को संग्रहित करना। (अंतिम चरण)

Q29

निम्नलिखित में से कौन से कथन इस प्रकार संबंधित हैं कि वे दोनों न तो सत्य हो सकते हैं और न ही असत्य?

ए. सभी कुत्ते सर्वाहारी होते हैं।

बी. कुछ कुत्ते सर्वाहारी होते हैं।

सी. कुछ कुत्ते सर्वाहारी नहीं होते हैं।

डी. कोई भी कुत्ता सर्वाहारी नहीं होता।

चुने सही नीचे दिए गए विकल्पों में से उत्तर चुनें:

(a) केवल A और C

(b) केवल B और C

(c) केवल C और D

(d) केवल A और D

उत्तर:

ए

सूरज:

यदि A सत्य है, तो सभी कुत्ते सर्वाहारी हैं, जो C के सीधे विपरीत है (जो कहता है कि कुछ कुत्ते सर्वाहारी नहीं हैं)।

यदि C सत्य है, तो सभी कुत्ते सर्वाहारी नहीं होते हैं, जो A के सीधे विपरीत है (जो दावा करता है कि सभी कुत्ते सर्वाहारी होते हैं)।

इसलिए, A और C दोनों एक साथ सत्य नहीं हो सकते, और न ही दोनों असत्य हो सकते हैं। यदि एक सत्य है, तो दूसरा असत्य होना चाहिए, और इसके विपरीत भी।

सूचना संवर्धक:

(a) परस्पर विरोधी कथन एक ही समय में सत्य नहीं हो सकते, न ही वे दोनों एक ही समय में असत्य हो सकते हैं।

(b) विरोध के वर्ग में, विरोधाभासी जोड़े एक दूसरे के सीधे विरोध में होते हैं।

(c) "सभी कुत्ते सर्वाहारी होते हैं" और "कुछ कुत्ते सर्वाहारी नहीं होते" जैसे कथन तार्किक रूप से एक साथ मौजूद नहीं हो सकते।

(d) विरोधाभास किसी भी सत्य-मूल्य मूल्यांकन के लिए एक तार्किक सीमा बनाते हैं, जिससे तर्क में स्पष्टता सुनिश्चित होती है।

Q30

फोटोकेमिकल स्मॉग के निर्माण की ओर ले जाने वाली घटनाओं का सही क्रम क्या है?

ए. सूर्य के प्रकाश में नाइट्रोजन ऑक्साइड और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों की प्रतिक्रिया

बी. वाहनों से नाइट्रोजन ऑक्साइड और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों का उत्सर्जन

सी. क्षोभमंडलीय ओजोन और अन्य हानिकारक रसायनों का निर्माण

डी. तापीय व्युत्क्रमण परत द्वारा प्रदूषकों का अवरोधन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) बी, ए, सी, डी

(b) ए बी सी डी

(c) बी, सी, ए, डी

(d) डी, ए, बी, सी

उत्तर:

ए

सूरज:

सही विकल्प - (a)

परिचय:

- प्रकाश रासायनिक धुंध एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय समस्या है, खासकर भारी वाहन यातायात और प्रचुर मात्रा में सूर्य की रोशनी वाले बड़े शहरी क्षेत्रों में।
- इसका मानव स्वास्थ्य, कृषि और पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

सूचना संवर्धक:

- वाहनों से नाइट्रोजन ऑक्साइड और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों का उत्सर्जन: यह प्रक्रिया प्राथमिक प्रदूषकों के उत्सर्जन से शुरू होती है, जो मुख्य रूप से वाहनों के निकास से निकलते हैं।
- सूर्य के प्रकाश में नाइट्रोजन ऑक्साइड और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों की प्रतिक्रिया: ये प्राथमिक प्रदूषक सूर्य के प्रकाश (एक प्रमुख घटक) की उपस्थिति में एक दूसरे के साथ प्रतिक्रिया करके द्वितीयक प्रदूषक बनाते हैं।
- क्षोभमंडलीय ओजोन और अन्य हानिकारक रसायनों का निर्माण: इस प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप क्षोभमंडलीय ओजोन, पेरॉक्सीएसिटोइल नाइट्रेट (पीएएन) और स्मॉग के अन्य घटकों का निर्माण होता है।
- ऊष्मीय व्युत्क्रमण परत द्वारा प्रदूषकों का फँसना: अक्सर, ऊष्मीय व्युत्क्रमण परत—जहाँ ठंडी हवा के ऊपर गर्म हवा की एक परत होती है—इन प्रदूषकों को जमीन के करीब फँसा लेती है, जिससे वे फैल नहीं पाते और धुंध की उच्च सांद्रता उत्पन्न होती है।
- प्रकाश रासायनिक धुंध एक गंभीर पर्यावरणीय समस्या है, खासकर भारी वाहन यातायात और प्रचुर मात्रा में सूर्यप्रकाश वाले बड़े शहरी क्षेत्रों में। इसका मानव स्वास्थ्य, कृषि और पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

Q31

कौन सा समझौता लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार को नियंत्रित करता है?

(a) सीआईटीईएस

(b) बेसल सम्मेलन

(c) रॉटरडैम सम्मेलन

(d) स्टॉकहोम सम्मेलन

उत्तर:

ए

सूरज:

लुप्तप्राय वन्य जीवों और वनस्पतियों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन (CITES) एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है जो लुप्तप्राय प्रजातियों के व्यापार को नियंत्रित करता है। इसे 1973 में इसलिए अपनाया गया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार वन्य जीवों के अस्तित्व को खतरे में न डाले। CITES प्रजातियों की संरक्षण स्थिति के आधार पर विभिन्न स्तरों के संरक्षण के साथ, उन्हें

तीन परिशिष्टों में सूचीबद्ध करके उनके संरक्षण के लिए एक ढांचा प्रदान करता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि वन्य जीवों और पौधों के नमूनों का व्यापार उनके अस्तित्व को खतरे में न डाले।

सूचना बूस्टर

CITES (वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन) वन्यजीवों के संरक्षण के लिए समर्पित सबसे व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय समझौतों में से एक है। यह परमिट प्रणाली के माध्यम से प्रजातियों के व्यापार को विनियमित करके कार्य करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण प्रजातियों का अत्यधिक दोहन न हो। यह सम्मेलन प्रजातियों को उनकी आवश्यक सुरक्षा के स्तर के आधार पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत करता है:

परिशिष्ट I: वे प्रजातियाँ जो विलुप्त होने के खतरे में हैं और असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए प्रतिबंधित हैं।

परिशिष्ट II: वे प्रजातियाँ जो वर्तमान में विलुप्त होने के खतरे में नहीं हैं, लेकिन यदि व्यापार को विनियमित नहीं किया जाता है तो वे विलुप्त होने के खतरे में आ सकती हैं।

परिशिष्ट III: वे प्रजातियाँ जो कम से कम एक देश में संरक्षित हैं और जिनके व्यापार को विनियमित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता होती है।

अतिरिक्त ज्ञान

बेसल कन्वेंशन: यह कन्वेंशन मुख्य रूप से खतरनाक अपशिष्टों के नियंत्रण और उनके निपटान पर केंद्रित है, और लुप्तप्राय प्रजातियों के व्यापार को विनियमित नहीं करता है।

रॉटरडैम कन्वेंशन: रॉटरडैम कन्वेंशन कुछ खतरनाक रसायनों और कीटनाशकों के व्यापार के लिए पूर्व सूचित सहमति प्रक्रिया से संबंधित है, न कि वन्यजीवों के व्यापार से।

स्टॉकहोम कन्वेंशन: स्टॉकहोम कन्वेंशन का ध्यान स्थायी कार्बनिक प्रदूषकों (पीओपी) पर केंद्रित है और इसका उद्देश्य पर्यावरण में खतरनाक रसायनों के उपयोग को कम करना और समाप्त करना है, लेकिन यह लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित नहीं है।

Q32

"DART सिस्टम" का उपयोग निम्नलिखित कार्यों के लिए किया जाता है:

- (a) सुनामी का पता लगाना
- (b) भूकंप की भविष्यवाणी
- (c) चक्रवात ट्रैकिंग
- (d) बाढ़ निगरानी

उत्तर:

ए

सूरज:

DART (गहरे समुद्र में सुनामी का आकलन और रिपोर्टिंग) प्रणाली का मुख्य रूप से सुनामी का पता लगाने के लिए उपयोग किया जाता है। यह समुद्री परिस्थितियों में होने वाले परिवर्तनों की निगरानी के लिए बुआ और सेंसर के एक नेटवर्क का उपयोग करता है, जिससे समुद्र के नीचे भूकंप या ज्वालामुखी विस्फोट से उत्पन्न सुनामी लहरों की प्रारंभिक चेतावनी देना संभव हो पाता है।

अतः, सही उत्तर (a) सुनामी का पता लगाना है।

सूचना संवर्धक:

डार्ट प्रणाली में समुद्र की सतह के उतार-चढ़ाव का पता लगाने के लिए समुद्री बुआ और समुद्र तल सेंसरों की एक श्रृंखला शामिल होती है, जो सुनामी की उपस्थिति का संकेत देती है।

यह प्रणाली सुनामी आने के कुछ ही मिनटों बाद उसका पता लगा सकती है, जिससे प्रभावित तटीय क्षेत्रों को महत्वपूर्ण प्रारंभिक चेतावनी मिल सकती है।

समय पर निकासी और तैयारी के उपायों को सक्षम बनाकर सुनामी से संबंधित मौतों को कम करने में डार्ट सिस्टम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यह प्रणाली सेंसरों से उपग्रहों तक डेटा के प्रसारण पर निर्भर करती है, जिससे सुनामी चेतावनी केंद्रों को वास्तविक समय में अपडेट मिलते हैं।

डार्ट तकनीक एक वैश्विक नेटवर्क का हिस्सा है जिसका उद्देश्य तटीय आबादी पर सुनामी के प्रभावों को कम करना है।

अतिरिक्त जानकारी:

भूकंप की भविष्यवाणी करना भूकंप विज्ञान में एक निरंतर चुनौती बनी हुई है, और वर्तमान में भूकंप की पूर्व भविष्यवाणी करने का कोई विश्वसनीय तरीका नहीं है।

चक्रवातों पर नजर रखने के लिए रडार, उपग्रहों और मौसम निगरानी प्रणालियों का उपयोग किया जाता है, लेकिन डार्ट प्रणाली इसमें शामिल नहीं है।

बाढ़ की निगरानी में नदी गेज और मौसम पूर्वानुमान जैसी विभिन्न प्रौद्योगिकियां शामिल हैं, लेकिन इसका DART प्रणाली से कोई संबंध नहीं है, जो विशेष रूप से सुनामी पर केंद्रित है।

Q33

2025 में COP30 का आयोजन कहाँ होगा?

- (a) दुबई, संयुक्त अरब अमीरात
- (b) बाकू, अज़रबैजान
- (c) बेलेम, ब्राजील
- (d) शर्म अल शेख, मिस्त्र

उत्तर:

सी

सूरज:

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) के पक्षकारों का 30वां सम्मेलन (COP30) नवंबर 2025 में ब्राजील के बेलेम में आयोजित किया जाएगा।

सूचना बूस्टर

सीओपी (पक्षों का सम्मेलन) यूएनएफसीसीसी का सर्वोच्च निर्णय लेने वाला निकाय है।

यह वैश्विक जलवायु प्रगति का आकलन करने, समझौतों पर बातचीत करने और जलवायु प्रतिबद्धताओं को मजबूत करने के लिए प्रतिवर्ष बैठक करता है।

क्योटो प्रोटोकॉल (सीओपी 3, 1997) और पेरिस समझौता (सीओपी 21, 2015) जैसे महत्वपूर्ण समझौते सीओपी में अपनाए गए थे।

बेलेम, अमेज़न वर्षावन में स्थित पारा राज्य की राजधानी है, जो कार्बन पृथक्करण और जैव विविधता में अमेज़न की भूमिका के कारण जलवायु चर्चाओं के लिए एक प्रतीकात्मक स्थान है।

राष्ट्रपति लुला दा सिल्वा द्वारा अमेज़न के मजबूत संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों के तहत, ब्राजील ने मिस्त्र के शर्म अल-शेख में COP27 (2022) के दौरान COP30 की मेजबानी करने का आधिकारिक प्रस्ताव दिया।

यह अमेज़न बायोम में आयोजित होने वाली पहली सीओपी होगी, जो जलवायु नीति में वर्षावन संरक्षण के महत्व को उजागर करेगी। अतिरिक्त जानकारी:

दुबई, यूएई → COP28 की मेजबानी (2023)।

बाकू, अज़रबैजान → COP29 की मेजबानी (2024)।

शर्म अल-शेख, मिस्त्र → COP27 की मेजबानी (2022)।

Q34 सूची I का सूची II से मिलान करें:

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

सूची I (प्रक्रिया)

सूची II (आउटपुट)

1. कोयले का गैसीकरण ए. सिंथेटिक कच्चा तेल

2. कोयले का द्रवीकरण बी. इस्पात उत्पादन में प्रयुक्त

3. कोयले की धुलाई सी. सिंथेटिक गैस

4. कोकिंग कोयला डी. कम राख वाला कोयला

- (a) 1-सी, 2-ए, 3-डी, 4-बी
 (b) 1-ए, 2-सी, 3-बी, 4-डी
 (c) 1-डी, 2-बी, 3-ए, 4-सी
 (d) 1-बी, 2-डी, 3-सी, 4-ए

उत्तर: ए

सूरज:

सही जोड़ी इस प्रकार है:

1-C, 2-A, 3-D, 4-B

1. कोयले का गैसीकरण → सी. सिंथेटिक गैस

प्रक्रिया: कोयला गैसीकरण में कोयले को उच्च तापमान पर ऑक्सीजन और भाप के साथ प्रतिक्रिया कराकर उसे संश्लेषण गैस (सिन्गैस) में परिवर्तित किया जाता है।

उत्पादन: सिंथेटिक गैस (CO + H₂ का मिश्रण) का उपयोग बिजली उत्पादन, उर्वरक या सिंथेटिक ईंधन के लिए किया जाता है।

2. कोयले का द्रवीकरण → ए. कृत्रिम कच्चा तेल

प्रक्रिया: कोयले का द्रवीकरण (उदाहरण के लिए, फिशर-ट्रॉप्सच प्रक्रिया) कोयले को तरल हाइड्रोकार्बन में परिवर्तित करता है।

उत्पाद: सिंथेटिक कच्चा तेल, जिसे परिष्कृत करके डीजल, गैसोलीन या जेट ईंधन बनाया जाता है।

3. कोयले की धुलाई → डी. कम राख वाला कोयला

प्रक्रिया: कोयले की धुलाई से कच्चे कोयले से अशुद्धियाँ (राख, सल्फर, चट्टानें) दूर हो जाती हैं।

आउटपुट: कम राख सामग्री वाला स्वच्छ कोयला (न कि "कम नमक वाला," संभवतः राख के लिए एक टाइपो)।

4. कोकिंग कोयला → B. इस्पात उत्पादन में प्रयुक्त

प्रक्रिया: कोकिंग कोयले को हवा की अनुपस्थिति में गर्म करके कोक का उत्पादन किया जाता है, जो एक छिद्रयुक्त, उच्च कार्बन वाला पदार्थ है।

आउटपुट: इस्पात निर्माण में विस्फोट भट्टियों के लिए कोक आवश्यक है (यह लौह अयस्क से ऑक्सीजन को हटाता है)।

Q35

सूची-I को सूची-II से मिलाएँ।

LIST-I (Document)	LIST-II (Recommendation)
A. Macaulay's minute	I. Promotion of Science knowledge among inhabitants
B. Dispatch of 1854	II. Establishment of a Sanskrit College at Calcutta
C. Rajaram Mohan Roy Memorandum	III. Establishment of a college in Nadiea
D. Lord Minto's minute	IV. Closure of oriental learning institutions

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) ए-आई, बी-II, सी-III, डी-IV।
(b) ए-II, बी-III, सी-IV, डी-I
(c) ए-III, बी-IV, सी-I, डी-III।
(d) ए-IV, बी-I, सी-II, डी-III।

Ans.(a)

सूरजः

प्रविष्टियों का मिलान करना:

सूची-I (दस्तावेज़)	सूची-II से सही मिलान
--------------------	----------------------

ए. मैकाले का कार्यवृत्त IV. प्राच्य शिक्षण संस्थानों का बंद होना – इससे अंग्रेजी (1835) शिक्षा को बढ़ावा मिला; प्राच्य अध्ययन का महत्व कम हुआ

बी. 1854 का प्रेषण (वुड का I. निवासियों के बीच विज्ञान ज्ञान का संवर्धन – प्रेषण) व्यावहारिक और आधुनिक विषयों पर जोर दिया गया

C. Rajaram Mohan Roy II. कलकत्ता में संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना – Memorandum संस्कृत का उपयोग करते हुए आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा की वकालत की गई

डी. लॉर्ड मिंटो का कार्यवृत्त III. नाडी में एक कॉलेज की स्थापना - पारंपरिक हिंदू शिक्षण संस्थानों को बढ़ावा दिया गया

Q36

निम्नलिखित में से कौन-कौन सी सिफारिशें गुणवत्ता आश्वासन पर यूजीसी की थीं?

ए. अव्यवहार्य कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को भंग करना
बी. निजी विश्वविद्यालयों के लिए एक समानांतर प्रत्यायन एजेंसी का निर्माण करना
सी. संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन पद्धतियों को अपनाना
डी. नवाचार और रचनात्मकता के माध्यम से गुणवत्ता बनाए रखना
ई. उपयुक्त मूल्यांकन और मान्यता प्रणालियों की स्थापना
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल A, B, C
- (b) केवल B, C, D
- (c) केवल C, D, E
- (d) केवल A, D, E

उत्तर:

सी

सूरज:

भारत में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने उच्च शिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता सुनिश्चित करने और उसे बढ़ाने के लिए कई उपायों की सिफारिश की है। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन (टीक्यूएम) प्रथाओं को अपनाना (सी): संस्थानों को सभी कार्यों में निरंतर गुणवत्ता सुधार पर व्यवस्थित रूप से ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- नवाचार और रचनात्मकता के माध्यम से गुणवत्ता बनाए रखना (डी): उच्च मानकों को बनाए रखने के लिए नवीन शिक्षण, अधिगम और प्रशासनिक विधियों को बढ़ावा देना।
- उपयुक्त मूल्यांकन और प्रत्यायन प्रणालियों की स्थापना (ई): गुणवत्ता मानकों को सुनिश्चित करने के लिए संस्थानों के मूल्यांकन और प्रत्यायन के लिए मजबूत ढांचे विकसित करना।

अव्यवहार्य कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को भंग करना (ए) और निजी विश्वविद्यालयों के लिए एक समानांतर प्रत्यायन एजेंसी बनाना (बी) गुणवत्ता आश्वासन पर यूजीसी की औपचारिक सिफारिशों का हिस्सा नहीं है।

सूचना संवर्धक:

- यूजीसी, एनएएसी (राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद) जैसे निकायों के माध्यम से गुणवत्ता आश्वासन को बढ़ावा देता है।
- गुणवत्ता आश्वासन संस्थागत प्रशासन, पाठ्यक्रम, संकाय, बुनियादी ढांचे और अनुसंधान परिणामों पर केंद्रित होता है।
- दंडात्मक उपायों जैसे कि संयंत्र को ध्वस्त करने के बजाय निरंतर गुणवत्ता सुधार पर जोर दिया जाता है।

अतिरिक्त जानकारी:

- यूजीसी का गुणवत्ता आश्वासन ढांचा वैश्विक प्रथाओं के अनुरूप है, जो पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर देता है।
- पाठ्यक्रम के डिजाइन और शिक्षण विधियों में नवाचार संस्थानों को प्रासंगिक और प्रतिस्पर्धी बने रहने में मदद करता है।
- मान्यता प्रणाली हितधारकों को संस्थागत प्रदर्शन के बारे में विश्वसनीय जानकारी प्रदान करती है।

Q37 निम्नलिखित में से पहचानें कि कौन सा बौद्ध धर्म से संबंधित है:

- ए. वेदों के अधिकार का अस्वीकरण
- बी. ईश्वर का इनकार

सी. जीव और अजीव श्रेणियों में विश्वास
डी. निर्वाण की अवधारणा
ई. प्रकृति और पुरुष का सिद्धांत
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें।

- (a) केवल A, B, C
(b) केवल B, C, D
(c) केवल A, B, D
(d) केवल A, B, E

उत्तर: सी

सूरज:

केवल A, B, D

ए. वेदों के अधिकार का अस्वीकरण

बौद्ध धर्म का दृष्टिकोण: बौद्ध धर्म एक श्रमण परंपरा के रूप में उभरा जिसने प्राचीन भारत की रूढ़िवादी वैदिक धार्मिक व्यवस्था को चुनौती दी। इस चुनौती का एक मूलभूत पहलू वेदों को अचूक ईश्वरीय ग्रंथ मानने की अस्वीकृति और उनका समर्थन करने वाले ब्राह्मणवादी पुरोहित वर्ग के अधिकार को अस्वीकार करना था।

ए के लिए निष्कर्ष: यह कथन सत्य है और यह बौद्ध धर्म को वैदिक परंपराओं से अलग करने वाली एक प्रमुख विशेषता है।

बी. ईश्वर का इनकार

बौद्ध धर्म का दृष्टिकोण: बौद्ध धर्म को अक्सर नास्तिक कहा जाता है। यद्यपि यह स्पष्ट रूप से देवताओं के अस्तित्व को नकारता नहीं है, फिर भी यह उन्हें सृष्टिकर्ता, उद्धारकर्ता या मोक्ष का अंतिम स्रोत नहीं मानता। बौद्ध धर्म में सर्वोच्च सत्ता के प्रति भक्ति के बजाय व्यक्तिगत प्रयास, कर्म और चार आर्य सत्यों को समझने और अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करके निर्वाण प्राप्त करने पर जोर दिया जाता है।

बी के लिए निष्कर्ष: व्यक्तिगत, सृष्टिकर्ता ईश्वर के संदर्भ में यह कथन काफी हद तक सत्य है।

सी. जीव और अजीव श्रेणियों में विश्वास

जीव और अजीव: ये जैन धर्म की मूल आध्यात्मिक श्रेणियां हैं, बौद्ध धर्म की नहीं। जैन धर्म में, जीव का तात्पर्य सजीव आत्मा (चेतना) से है, और अजीव का तात्पर्य निर्जीव पदार्थों (पदार्थ, स्थान, समय, धर्म, अधर्म) से है। जैन धर्म का दर्शन इन्हीं भेदों पर आधारित है। बौद्ध धर्म का दृष्टिकोण: बौद्ध धर्म अनात्म (अनात्म या आत्माहीनता) की अवधारणा को मानता है, जो जैन धर्म की शाश्वत जीव की अवधारणा के बिल्कुल विपरीत है। यद्यपि बौद्ध धर्म घटनाओं को विभिन्न स्कंधों में विभाजित करके उनका विश्लेषण करता है, लेकिन यह जीव/अजीव ढांचे का उपयोग नहीं करता है।

C के लिए निष्कर्ष: बौद्ध धर्म के संबंध में यह कथन असत्य है।

डी. निर्वाण की अवधारणा

बौद्ध धर्म में निर्वाण: निर्वाण (पाली: निब्बाना) बौद्ध धर्म का अंतिम लक्ष्य है। यह दुख, लालसा और संसार के चक्र के अंत का प्रतीक है। इसे अक्सर इच्छा, अज्ञान और आसक्ति की ज्वाला का बुझना बताया जाता है।

डी के लिए निष्कर्ष: यह कथन अत्यंत सत्य है और बौद्ध शिक्षाओं का मूल आधार है।

ई. प्रकृति और पुरुष का सिद्धांत

प्रकृति और पुरुष: ये हिंदू दर्शन के सांख्य संप्रदाय की मूलभूत अवधारणाएँ हैं, और योग दर्शन में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रकृति आदिम पदार्थ या प्रकृति है, जो ब्रह्मांड का भौतिक कारण है। पुरुष शुद्ध चेतना है, जो चेतन सिद्धांत है। प्रकृति और पुरुष की परस्पर क्रिया इन प्रणालियों में संसार की रचना और अनुभव की व्याख्या करती है।

बौद्ध धर्म का दृष्टिकोण: बौद्ध धर्म प्रकृति और पुरुष के सांख्य दर्शन को नहीं अपनाता है। इसके ब्रह्मांडीय और मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण प्रतीत्यसमुत्पाद, कर्म और स्कंध जैसे सिद्धांतों पर आधारित हैं।

E के लिए निष्कर्ष: बौद्ध धर्म के संबंध में यह कथन असत्य है।

उपलब्ध विकल्पों का मूल्यांकन:

अब देखते हैं कि सही कथनों का कौन सा संयोजन दिए गए विकल्पों से मेल खाता है:

हमें A (सत्य), B (सत्य), D (सत्य) प्राप्त हुए।

हमें C (गलत) और E (गलत) मिला।

आइए दिए गए विकल्पों की जांच करें:

(a) केवल A, B, C: गलत, क्योंकि C असत्य है।

(b) केवल B, C, D: गलत, क्योंकि C गलत है।

(सी) केवल ए, बी, डी: सही, क्योंकि ए, बी और डी तीनों सत्य हैं और बौद्ध धर्म से संबंधित हैं।

(d) केवल A, B, E: गलत, क्योंकि E असत्य है।

अंतिम उत्तर:

विस्तृत विश्लेषण के आधार पर, बौद्ध धर्म से जुड़े कथन हैं "वेदों के अधिकार का अस्वीकरण", "ईश्वर का इनकार" और "निर्वाण की अवधारणा"।

सही उत्तर (c) A, B, D ही है।

Q38

भारत में उच्च शिक्षा पर यशपाल समिति की रिपोर्ट की प्रमुख सिफारिश क्या थी?

(a) उच्च शिक्षा संस्थानों का निजीकरण

(b) सभी विश्वविद्यालयों के लिए एक समान प्रवेश परीक्षा शुरू करना

(c) राष्ट्रीय उच्च शिक्षा प्राधिकरण की स्थापना

(d) उच्च शिक्षा के लिए सरकारी अनुदान में कमी

उत्तर: सी

सूरज:

राष्ट्रीय उच्च शिक्षा प्राधिकरण की स्थापना

भारत में उच्च शिक्षा पर यशपाल समिति की रिपोर्ट की प्राथमिक सिफारिश। आइए प्रत्येक विकल्प का विश्लेषण करें:

यशपाल समिति के बारे में: यशपाल समिति का गठन 2009 में प्रोफेसर यश पाल की अध्यक्षता में भारत में उच्च शिक्षा में सुधारों के सुझाव देने के लिए किया गया था। इसकी रिपोर्ट का शीर्षक था "भारत में उच्च शिक्षा का नवीनीकरण और पुनरुद्धार"।

(क) उच्च शिक्षा संस्थानों का निजीकरण: हालांकि निजी संस्थानों की संख्या में वृद्धि हुई है, यशपाल समिति की प्राथमिक सिफारिश निजीकरण को बढ़ावा देना नहीं थी। वास्तव में, इसका उद्देश्य सार्वजनिक और निजी दोनों संस्थानों की गुणवत्ता को विनियमित करना और सुधारना था।

(ख) सभी विश्वविद्यालयों के लिए एक समान प्रवेश परीक्षा की शुरुआत: हालांकि विशिष्ट पाठ्यक्रमों या विश्वविद्यालयों के समूहों के लिए समान प्रवेश परीक्षाएं मौजूद हैं (जैसे इंजीनियरिंग के लिए जेईई या मेडिकल के लिए नीट), यशपाल समिति की प्राथमिक सिफारिश केवल सभी विश्वविद्यालयों के लिए एक समान प्रवेश परीक्षा पर केंद्रित नहीं थी। उनका ध्यान व्यापक था, नियामक ढांचे के पुनर्गठन पर।

(ग) राष्ट्रीय उच्च शिक्षा प्राधिकरण की स्थापना: यह सबसे सटीक विकल्प है। यशपाल समिति की एक केंद्रीय और महत्वपूर्ण सिफारिश यूजीसी (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग), एआईसीटीई (अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद), एनसीटीई (राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद) और भारतीय चिकित्सा परिषद (एमसीआई) जैसे कई नियामक निकायों को समाप्त करना और इसके स्थान पर राष्ट्रीय उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान आयोग (एनसीएचईआर) नामक एक एकल व्यापक नियामक निकाय की स्थापना करना था। इस निकाय की परिकल्पना सभी विषयों में उच्च शिक्षा और अनुसंधान के लिए मानक निर्धारित करने, विनियमन करने और प्रोत्साहन देने हेतु एक पूरी तरह से स्वतंत्र और सशक्त प्राधिकरण के रूप में की गई थी। यह "राष्ट्रीय उच्च शिक्षा प्राधिकरण" की अवधारणा के साथ अच्छी तरह से मेल खाता है।

(घ) उच्च शिक्षा के लिए सरकारी निधि में कमी: यशपाल समिति की रिपोर्ट में सरकारी निधि में कमी करने के बजाय उच्च शिक्षा में निवेश बढ़ाने और मौजूदा निधियों का बेहतर उपयोग करने की वकालत की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य गुणवत्ता और पहुंच में सुधार करना था, जिसके लिए अक्सर पर्याप्त निधि की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष:

यशपाल समिति की रिपोर्ट की प्राथमिक सिफारिश वास्तव में उच्च शिक्षा के लिए एक एकल, सर्वोपरि नियामक निकाय की स्थापना थी, जिसे व्यापक रूप से "राष्ट्रीय उच्च शिक्षा प्राधिकरण" या अधिक विशेष रूप से, राष्ट्रीय उच्च शिक्षा और अनुसंधान आयोग (एनसीएचईआर) के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है।

इसलिए, सही उत्तर (सी) है।

Q39 इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष में हुई थी।

- (a) 1887
- (b) 1901
- (c) 1905
- (d) 1911

उत्तर: ए

सूरज: 1887

इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय भारत के सबसे पुराने आधुनिक विश्वविद्यालयों में से एक है। इसकी स्थापना 23 सितंबर, 1887 को हुई थी। प्रारंभ में यह एक संबद्धता प्रदान करने वाला और परीक्षा आयोजित करने वाला निकाय था, बाद में यह एक शिक्षण विश्वविद्यालय बन गया। इसे अक्सर "पूर्व का ऑक्सफोर्ड" कहा जाता है।

आइए दिए गए विकल्पों की जांच करें:

(क) 1887: यह इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना का सही वर्ष है।

(ख) 1901: गलत।

(सी) 1905: गलत। बंगाल का विभाजन इसी वर्ष हुआ था, लेकिन इसका विश्वविद्यालय की स्थापना से कोई संबंध नहीं है।

(घ) 1911: गलत। ब्रिटिश भारत की राजधानी इस वर्ष कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित की गई थी, लेकिन इसका विश्वविद्यालय की स्थापना से कोई संबंध नहीं है।

निष्कर्ष:

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1887 में हुई थी।

Q40

एक 1240 मीटर लंबा गोलाकार ट्रैक है, और दो व्यक्ति, A और B, एक ही बिंदु से शुरू होकर एक ही दिशा में ट्रैक पर दौड़ रहे हैं। A 12 किमी/घंटा की गति से दौड़ता है जबकि B 16 किमी/घंटा की गति से दौड़ता है। कितने समय (मिनटों में) के बाद वे पहली बार मिलेंगे?

(a) 18.6

(b) 16.8

(c) 20.5

(d) 15.5

उत्तर: ए

सूरज:

दिया गया:

वृत्ताकार ट्रैक की लंबाई = 1240 मीटर

A की गति = 12 किमी/घंटा = 12000 मीटर/घंटा

B की गति = 16 किमी/घंटा = 16000 मीटर/घंटा

दोनों एक ही बिंदु से शुरू होकर एक ही दिशा में दौड़ते हैं।

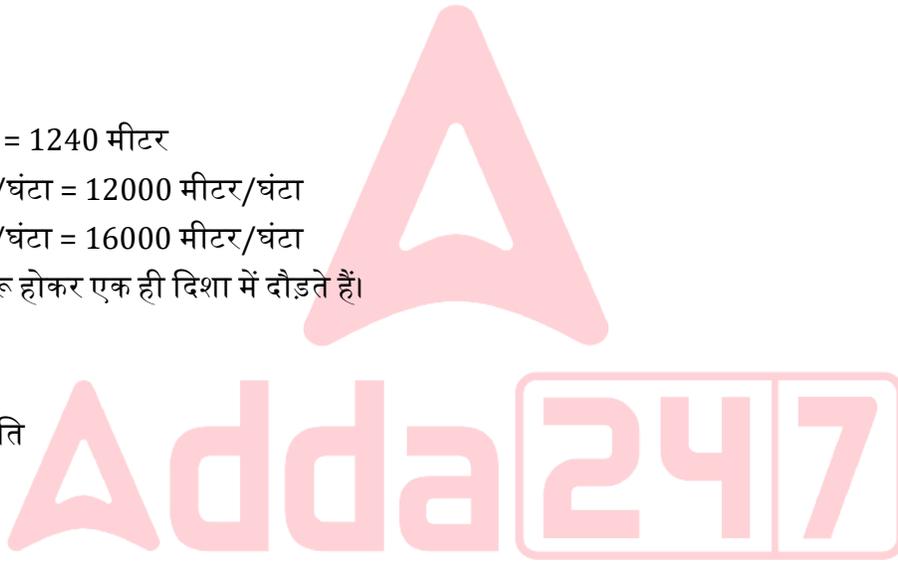
प्रयुक्त सूत्र:

समय =

ट्रैक की लंबाई सापेक्ष गति

सापेक्ष गति

ट्रैक की लंबाई



समाधान:

सापेक्ष गति = 16000 - 12000 = 4000 मीटर/घंटा

मिलने का समय =

$1240 \times 60 / 4000 = 74400 / 4000$

4000

1240×60

=

4000

74400

= 18.6 मिनट

Q41

सोमवार और शुक्रवार की कुल बिक्री के औसत और बुधवार और शुक्रवार की कुल बिक्री के औसत के बीच का अंतर ज्ञात कीजिए।
कथन:

- (I) सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को औसत बिक्री 18,000 रुपये है।
(II) बुधवार और शुक्रवार को मिलाकर कुल बिक्री 39,000 रुपये है।
(III) सोमवार और शुक्रवार को मिलाकर कुल बिक्री 36,000 रुपये है।
(a) 1,500 रुपये
(b) 2,000 रुपये
(c) 2,500 रुपये
(d) 3,000 रुपये

उत्तर:

ए

सूरज:

दिए गए कथन:

(I) सोमवार (M), बुधवार (W) और शुक्रवार (F) को औसत बिक्री = 18,000 रुपये $(M+W+F)/3 = 18,000$ रुपये

$$M + W + F = 54000 \dots (1)$$

(II) बुधवार और शुक्रवार को कुल बिक्री = ₹39,000

$$W + F = 39000 \dots (2)$$

(III) सोमवार और शुक्रवार को कुल बिक्री = 36,000 रुपये

$$M + F = 36000 \dots (3)$$

समीकरण (2) को (1) में प्रतिस्थापित करें:

$$M + (W + F) = 54000$$

$$M + 39000 = 54000$$

$$M = 15000 \dots (4)$$

अब समीकरण (4) को समीकरण (3) में प्रयोग करें:

$$15000 + F = 36000$$

$$F = 21000 \dots (5)$$

अब W ज्ञात करने के लिए समीकरण (2) का उपयोग करें:

$$W + 21000 = 39000$$

$$W = 18000 \dots (6)$$

अब खोजें:

ए. सोमवार और शुक्रवार का औसत:

$$(\text{पुरुष} + \text{महिला})/2 = (15000+21000)/2 = 18000$$

बी. बुधवार और शुक्रवार का औसत:

$$(W+F)/2 = (18000+21000)/2 = 19500$$

औसत में अंतर

$$19500-18000 = 1500 \text{ रुपये}$$

Q42. सात घंटियाँ क्रमशः 2, 3, 4, 6, 8, 9 और 12 मिनट के अंतराल पर बजती हैं। वे सुबह 7:10 बजे एक साथ बजना शुरू हुईं। अगली बार वे सभी एक साथ कब बजेंगी?

(a) सुबह 8:22 बजे

(b) सुबह 8:20 बजे

(c) सुबह 8:26 बजे

(d) सुबह 8:24 बजे

उत्तर: ए

सूरज:

दिया गया है: घंटी के अंतराल: 2, 3, 4, 6, 8, 9, 12 मिनट।

प्रारंभिक समवर्ती रिंग का समय: सुबह 7:10 बजे।

Prime Factorization:

$$2 = 2$$

$$3 = 3$$

$$4 = 2^2$$

$$6 = 2 \times 3$$

$$8 = 2^3$$

$$9 = 3^2$$

$$12 = 2^2 \times 3$$

$$\text{LCM} = 2^3 \times 3^2 = 8 \times 9 = 72 \text{ minutes}$$

72 मिनट बाद घंटियाँ फिर से एक साथ बजेंगी।

चूंकि घंटियाँ सुबह 7:10 बजे बजनी शुरू हुईं, इसलिए हम इस समय में 72 मिनट जोड़ते हैं। सुबह 7:10 + 72 मिनट = सुबह 8:22।

Q43. A एक काम को 15 दिनों में कर सकता है और B उसे 24 दिनों में कर सकता है। यदि वे बारी-बारी से काम करें, तो वे काम को कितने दिनों में पूरा करेंगे, बशर्ते कि काम A शुरू करे?

- A. $18\frac{1}{3}$
- B. $18\frac{4}{8}$
- C. 17
- D. $17\frac{2}{5}$

Sol: Given:

A can do a piece of work in 15 days and B can do it in 24 days. A begins the work and works alternately.

Solution:

Total Work = LCM of 15 and 24 = 120 days

Efficiency of A = $\frac{120}{15} = 8$ days

Efficiency of B = $\frac{120}{24} = 5$ days

Total amount of work done by both in 2 days = $8 + 5 = 13$ unit

Total amount of work done by both in 16 days = $13 \times 8 = 104$ unit

Now the 17th days, Work will be done by A:

So, Amount of work done by A on 17th day = 8 unit

So, Remaining work = $120 - 104 - 8 = 8$ unit

Amount of work done by B on 18th day = 5 unit

Remaining work = 3 unit

This 3 unit of work has to be done by A in $\frac{3}{8}$ days

Total Time to complete the work alternately = $18 + \frac{3}{8} = 18\frac{3}{8}$ days

Q44. निम्नलिखित प्रेक्षणों को आरोही क्रम में व्यवस्थित किया गया है।

29, 32, 48, 50, x, x + 2, 72, 78, 84, 90

यदि माध्यिका 63 है, तो x का मान क्या होगा?

(a) 63

(b) 65

(c) 51

(d) 62

Ans.(a)

Sol: Given:

Data (in ascending order):

29, 32, 48, 50, x , $x + 2$, 72, 78, 84, 90

Median = 63

Formula Used:

For an even number of observations :

$$\text{Median} = \frac{\left(\frac{n}{2}\right)^{\text{th}} \text{ term} + \left(\frac{n}{2} + 1\right)^{\text{th}} \text{ term}}{2}$$

Solution:

$$n = 10$$

$$\text{Median} = \frac{5^{\text{th}} \text{ term} + 6^{\text{th}} \text{ term}}{2}$$

$$63 = \frac{x + (x + 2)}{2}$$

$$63 = \frac{2x + 2}{2}$$

$$63 = x + 1$$

$$x = 62$$



Q45. एक निश्चित कोड भाषा में 'USJI' को '49' और 'DPTQ' को '51' के रूप में कोडित किया जाता है। दी गई भाषा में 'FAUL' का कोड क्या होगा?

- (a) 62
- (b) 57
- (c) 68
- (d) 59

Ans.(c)

Sol: Given: 'USJI' is coded as '49' and 'DPTQ' is coded as '51'.

Logic: Sum of opposite letter positions = Code

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M
Z	Y	X	W	V	U	T	S	R	Q	P	O	N
26	25	24	23	22	21	20	19	18	17	16	15	14

Question: Find the code for FAUL

Logic:

Code = Sum of opposite alphabet positions (27 – letter position). or some of place values of opposite letters.

Explanation:

USJI:

U(21)→6, S(19)→8, J(10)→17, I(9)→18

Sum = 6+8+17+18 = 49

DPTQ:

D(4)→23, P(16)→11, T(20)→7, Q(17)→10

Sum = 23+11+7+10 = 51

FAUL:

F(6)→21, A(1)→26, U(21)→6, L(12)→15

Sum = 21+26+6+15 = 68

Final Answer:

68

Q46

निम्नलिखित में से कौन सा है नही किया अनुच्छेद में डिजिटल संचार की चुनौती के रूप में इसका उल्लेख किया गया है?

21वीं सदी में, संचार एक गतिशील और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में विकसित हो चुका है, जो तीव्र तकनीकी प्रगति और बदलती सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित है। प्रिंटिंग प्रेस से लेकर डिजिटल युग तक, संचार माध्यम गति, सटीकता और सुगमता की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए लगातार विकसित होते रहे हैं। हाल के दशकों में सबसे अधिक परिवर्तनकारी शक्तियों में से एक डिजिटल और जनसंचार माध्यमों का उदय रहा है। विशेष रूप से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने सूचना के उत्पादन और वितरण को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिससे व्यक्ति वैश्विक दर्शकों के साथ तुरंत सामग्री साझा कर सकते हैं। हालांकि, इस खुलेपन ने गलत सूचना, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में कमी और मौजूदा मान्यताओं को सुदृढ़ करने वाले प्रतिध्वनि कक्षों जैसी चुनौतियों को भी जन्म दिया है। टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र और अब डिजिटल प्लेटफॉर्म सहित जनसंचार माध्यम, जनमत, सांस्कृतिक मानदंडों और यहां तक कि राजनीतिक परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, फिल्मों और टेलीविजन नाटक न केवल मनोरंजन करते हैं बल्कि शिक्षा, जागरूकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के शक्तिशाली साधन भी हैं। दूसरी ओर, समाचार माध्यम एक प्रहरी की भूमिका निभाते हैं, सरकारों और संस्थानों को जवाबदेह ठहराते हैं, हालांकि पूर्वाग्रह, सनसनीखेज खबरों और व्यावसायिक हितों के लिए अक्सर इसकी आलोचना की जाती है।

शिक्षा क्षेत्र ने भी कक्षा से परे ज्ञान प्रदान करने के साधन के रूप में जनसंचार माध्यमों को अपनाया है। शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम, पॉडकास्ट और यूट्यूब व्याख्यानों ने सीखने को अधिक सुलभ बना दिया है, विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में। इंटरैक्टिव उपकरणों और मल्टीमीडिया सामग्री के एकीकरण ने शिक्षार्थियों की सहभागिता और समझ को बढ़ाया है। फिर भी, डिजिटल विभाजन एक महत्वपूर्ण

बाधा बना हुआ है, क्योंकि प्रौद्योगिकी और विश्वसनीय इंटरनेट की पहुँच विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक-आर्थिक समूहों में असमान बनी हुई है।

वैश्वीकरण के संदर्भ में, मीडिया विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और अनुभवों को जोड़ने वाले एक सेतु के रूप में उभरा है। अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा, संगीत और ऑनलाइन सहयोग अंतर-सांस्कृतिक समझ और सहानुभूति को बढ़ावा देते हैं। हालांकि, यह वैश्विक जुड़ाव सांस्कृतिक समरूपता को लेकर चिंताएं भी पैदा करता है, जहां प्रमुख संस्कृतियां स्थानीय परंपराओं पर हावी हो सकती हैं। इस प्रकार, संचार प्रौद्योगिकियों ने निस्संदेह मानवीय संपर्क को बढ़ाया है, लेकिन साथ ही साथ जटिल चुनौतियां भी पेश की हैं जिनके लिए गहन मूल्यांकन और जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता है।

(a) झूठी खबर

(b) ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में कमी

(c) समाचार पत्रों की उत्पादन लागत में वृद्धि

(d) प्रतिध्वनि कक्ष

उत्तर:

सी

सूरज:

परिचय:

इस लेख में समकालीन समाज में डिजिटल और जनसंचार माध्यमों के लाभों और चुनौतियों दोनों पर चर्चा की गई है।

सूचना संवर्धक:

इस लेख में गलत सूचना, घटती एकाग्रता अवधि और प्रतिध्वनि कक्षों को डिजिटल युग की प्रमुख चुनौतियों के रूप में उजागर किया गया है। हालांकि, इसमें समाचार पत्रों की उत्पादन लागत में वृद्धि का कहीं भी उल्लेख नहीं है।

अतिरिक्त जानकारी:

- (a), (b), और (d) अनुच्छेद में प्रत्यक्ष रूप से बताई गई चुनौतियाँ हैं।
- (सी) चर्चा की गई मुख्य चुनौतियों से असंबंधित है और इसलिए यह सही उत्तर है।

Q47

अनुच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा एक है? सकारात्मक शिक्षा में जनसंचार माध्यमों का योगदान?

21वीं सदी में, संचार एक गतिशील और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में विकसित हो चुका है, जो तीव्र तकनीकी प्रगति और बदलती सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित है। प्रिंटिंग प्रेस से लेकर डिजिटल युग तक, संचार माध्यम गति, सटीकता और सुगमता की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए लगातार विकसित होते रहे हैं। हाल के दशकों में सबसे अधिक परिवर्तनकारी शक्तियों में से एक डिजिटल और जनसंचार माध्यमों का उदय रहा है। विशेष रूप से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने सूचना के उत्पादन और वितरण को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिससे व्यक्ति वैश्विक दर्शकों के साथ तुरंत सामग्री साझा कर सकते हैं। हालांकि, इस खुलेपन ने गलत सूचना, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में कमी और मौजूदा मान्यताओं को सुदृढ़ करने वाले प्रतिध्वनि कक्षों जैसी चुनौतियों को भी जन्म दिया है।

टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र और अब डिजिटल प्लेटफॉर्म सहित जनसंचार माध्यम, जनमत, सांस्कृतिक मानदंडों और यहां तक कि राजनीतिक परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, फिल्में और टेलीविजन नाटक न केवल मनोरंजन करते हैं बल्कि शिक्षा, जागरूकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के शक्तिशाली साधन भी हैं। दूसरी ओर, समाचार

माध्यम एक प्रहरी की भूमिका निभाते हैं, सरकारों और संस्थानों को जवाबदेह ठहराते हैं, हालांकि पूर्वाग्रह, सनसनीखेज खबरों और व्यावसायिक हितों के लिए अक्सर इसकी आलोचना की जाती है।

शिक्षा क्षेत्र ने भी कक्षा से परे ज्ञान प्रदान करने के साधन के रूप में जनसंचार माध्यमों को अपनाया है। शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम, पॉडकास्ट और यूट्यूब व्याख्यानो ने सीखने को अधिक सुलभ बना दिया है, विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में। इंटरैक्टिव उपकरणों और मल्टीमीडिया सामग्री के एकीकरण ने शिक्षार्थियों की सहभागिता और समझ को बढ़ाया है। फिर भी, डिजिटल विभाजन एक महत्वपूर्ण बाधा बना हुआ है, क्योंकि प्रौद्योगिकी और विश्वसनीय इंटरनेट की पहुँच विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक-आर्थिक समूहों में असमान बनी हुई है।

वैश्वीकरण के संदर्भ में, मीडिया विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और अनुभवों को जोड़ने वाले एक सेतु के रूप में उभरा है। अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा, संगीत और ऑनलाइन सहयोग अंतर-सांस्कृतिक समझ और सहानुभूति को बढ़ावा देते हैं। हालांकि, यह वैश्विक जुड़ाव सांस्कृतिक समरूपता को लेकर चिंताएं भी पैदा करता है, जहां प्रमुख संस्कृतियां स्थानीय परंपराओं पर हावी हो सकती हैं। इस प्रकार, संचार प्रौद्योगिकियों ने निस्संदेह मानवीय संपर्क को बढ़ाया है, लेकिन साथ ही साथ जटिल चुनौतियां भी पेश की हैं जिनके लिए गहन मूल्यांकन और जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता है।

- समाचार कवरेज में सनसनीखेज खबरों को बढ़ावा देना
- कक्षा से परे ज्ञान प्रदान करना
- प्रतिध्वनि कक्षों के माध्यम से मौजूदा मान्यताओं को सुदृढ़ करना
- सांस्कृतिक समरूपता को बढ़ावा देना

उत्तर:

बी

सूरज:

परिचय:

जनसंचार माध्यमों को शिक्षा में कई तरीकों से एकीकृत किया गया है, खासकर डिजिटल प्लेटफॉर्मों के उदय के साथ।

सूचना संवर्धक:

इस अनुच्छेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जनसंचार माध्यम टेलीविजन कार्यक्रमों, पॉडकास्ट और ऑनलाइन व्याख्यानो के माध्यम से कक्षा से परे ज्ञान पहुंचाने में मदद करते हैं, जिससे शिक्षा अधिक सुलभ हो जाती है।

अतिरिक्त जानकारी:

- (a) और (c) नकारात्मक पहलू हैं।
- (घ) वैश्वीकरण की चिंता के रूप में उल्लेख किया गया है, न कि शिक्षा में लाभ के रूप में।

Q48

इस शब्द का क्या अर्थ है? सांस्कृतिक समरूपता इस अनुच्छेद के संदर्भ में किसका उल्लेख करना है?

21वीं सदी में, संचार एक गतिशील और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में विकसित हो चुका है, जो तीव्र तकनीकी प्रगति और बदलती सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित है। प्रिंटिंग प्रेस से लेकर डिजिटल युग तक, संचार माध्यम गति, सटीकता और सुगमता की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए लगातार विकसित होते रहे हैं। हाल के दशकों में सबसे अधिक परिवर्तनकारी शक्तियों में से एक डिजिटल और जनसंचार माध्यमों का उदय रहा है। विशेष रूप से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने सूचना के उत्पादन और वितरण को लोकतांत्रिक

बना दिया है, जिससे व्यक्ति वैश्विक दर्शकों के साथ तुरंत सामग्री साझा कर सकते हैं। हालांकि, इस खुलेपन ने गलत सूचना, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में कमी और मौजूदा मान्यताओं को सुदृढ़ करने वाले प्रतिध्वनि कक्षों जैसी चुनौतियों को भी जन्म दिया है। टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र और अब डिजिटल प्लेटफॉर्म सहित जनसंचार माध्यम, जनमत, सांस्कृतिक मानदंडों और यहां तक कि राजनीतिक परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, फिल्मों और टेलीविजन नाटक न केवल मनोरंजन करते हैं बल्कि शिक्षा, जागरूकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के शक्तिशाली साधन भी हैं। दूसरी ओर, समाचार माध्यम एक प्रहरी की भूमिका निभाते हैं, सरकारों और संस्थानों को जवाबदेह ठहराते हैं, हालांकि पूर्वाग्रह, सनसनीखेज खबरों और व्यावसायिक हितों के लिए अक्सर इसकी आलोचना की जाती है।

शिक्षा क्षेत्र ने भी कक्षा से परे ज्ञान प्रदान करने के साधन के रूप में जनसंचार माध्यमों को अपनाया है। शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम, पॉडकास्ट और यूट्यूब व्याख्यानो ने सीखने को अधिक सुलभ बना दिया है, विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में। इंटरैक्टिव उपकरणों और मल्टीमीडिया सामग्री के एकीकरण ने शिक्षार्थियों की सहभागिता और समझ को बढ़ाया है। फिर भी, डिजिटल विभाजन एक महत्वपूर्ण बाधा बना हुआ है, क्योंकि प्रौद्योगिकी और विश्वसनीय इंटरनेट की पहुँच विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक-आर्थिक समूहों में असमान बनी हुई है।

वैश्वीकरण के संदर्भ में, मीडिया विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और अनुभवों को जोड़ने वाले एक सेतु के रूप में उभरा है। अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा, संगीत और ऑनलाइन सहयोग अंतर-सांस्कृतिक समझ और सहानुभूति को बढ़ावा देते हैं। हालांकि, यह वैश्विक जुड़ाव सांस्कृतिक समरूपता को लेकर चिंताएं भी पैदा करता है, जहां प्रमुख संस्कृतियाँ स्थानीय परंपराओं पर हावी हो सकती हैं। इस प्रकार, संचार प्रौद्योगिकियों ने निस्संदेह मानवीय संपर्क को बढ़ाया है, लेकिन साथ ही साथ जटिल चुनौतियाँ भी पेश की हैं जिनके लिए गहन मूल्यांकन और जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता है।

- मीडिया के माध्यम से स्थानीय परंपराओं को सुदृढ़ बनाना
- विभिन्न संस्कृतियों का एक प्रमुख संस्कृति में विलय होना
- फिल्मों और संगीत के माध्यम से बहुभाषावाद को प्रोत्साहित करना
- लुप्तप्राय सांस्कृतिक प्रथाओं का संरक्षण करना

उत्तर:

बी

सूरज:

परिचय:

इस लेख में वैश्वीकरण और जनसंचार माध्यमों से जुड़ी एक चिंता के रूप में सांस्कृतिक समरूपता पर चर्चा की गई है।

सूचना संवर्धक:

सांस्कृतिक समरूपता तब होती है जब प्रमुख संस्कृतियाँ स्थानीय परंपराओं पर हावी हो जाती हैं या उन्हें प्रतिस्थापित कर देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक विविधता कम हो जाती है।

अतिरिक्त जानकारी:

- (a) और (d) समरूपता के विपरीत हैं।
- (सी) यह एक सकारात्मक सांस्कृतिक आदान-प्रदान है, न कि समरूपता।

Q49

कौन सा माध्यम है नहीं किया यह शब्द अनुच्छेद में जनसंचार माध्यमों की परिभाषा में शामिल है?

21वीं सदी में, संचार एक गतिशील और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में विकसित हो चुका है, जो तीव्र तकनीकी प्रगति और बदलती सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित है। प्रिंटिंग प्रेस से लेकर डिजिटल युग तक, संचार माध्यम गति, सटीकता और सुगमता की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए लगातार विकसित होते रहे हैं। हाल के दशकों में सबसे अधिक परिवर्तनकारी शक्तियों में से एक डिजिटल और जनसंचार माध्यमों का उदय रहा है। विशेष रूप से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने सूचना के उत्पादन और वितरण को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिससे व्यक्ति वैश्विक दर्शकों के साथ तुरंत सामग्री साझा कर सकते हैं। हालांकि, इस खुलेपन ने गलत सूचना, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में कमी और मौजूदा मान्यताओं को सुदृढ़ करने वाले प्रतिध्वनि कक्षों जैसी चुनौतियों को भी जन्म दिया है। टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र और अब डिजिटल प्लेटफॉर्म सहित जनसंचार माध्यम, जनमत, सांस्कृतिक मानदंडों और यहां तक कि राजनीतिक परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, फिल्मों और टेलीविजन नाटक न केवल मनोरंजन करते हैं बल्कि शिक्षा, जागरूकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के शक्तिशाली साधन भी हैं। दूसरी ओर, समाचार माध्यम एक प्रहरी की भूमिका निभाते हैं, सरकारों और संस्थानों को जवाबदेह ठहराते हैं, हालांकि पूर्वाग्रह, सनसनीखेज खबरों और व्यावसायिक हितों के लिए अक्सर इसकी आलोचना की जाती है।

शिक्षा क्षेत्र ने भी कक्षा से परे ज्ञान प्रदान करने के साधन के रूप में जनसंचार माध्यमों को अपनाया है। शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम, पॉडकास्ट और यूट्यूब व्याख्यानो ने सीखने को अधिक सुलभ बना दिया है, विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में। इंटरैक्टिव उपकरणों और मल्टीमीडिया सामग्री के एकीकरण ने शिक्षार्थियों की सहभागिता और समझ को बढ़ाया है। फिर भी, डिजिटल विभाजन एक महत्वपूर्ण बाधा बना हुआ है, क्योंकि प्रौद्योगिकी और विश्वसनीय इंटरनेट की पहुँच विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक-आर्थिक समूहों में असमान बनी हुई है।

वैश्वीकरण के संदर्भ में, मीडिया विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और अनुभवों को जोड़ने वाले एक सेतु के रूप में उभरा है। अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा, संगीत और ऑनलाइन सहयोग अंतर-सांस्कृतिक समझ और सहानुभूति को बढ़ावा देते हैं। हालांकि, यह वैश्विक जुड़ाव सांस्कृतिक समरूपता को लेकर चिंताएं भी पैदा करता है, जहां प्रमुख संस्कृतियां स्थानीय परंपराओं पर हावी हो सकती हैं। इस प्रकार, संचार प्रौद्योगिकियों ने निस्संदेह मानवीय संपर्क को बढ़ाया है, लेकिन साथ ही साथ जटिल चुनौतियां भी पेश की हैं जिनके लिए गहन मूल्यांकन और जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता है।

- (a) सिनेमा
- (b) रेडियो
- (c) सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म
- (d) व्यक्तिगत हस्तलिखित पत्र

Ans.(a)

सूरज:

परिचय:

इस अनुच्छेद में कई जनसंचार माध्यमों और उनके कार्यों का विवरण दिया गया है।

सूचना संवर्धक:

जनसंचार माध्यमों में टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र और सोशल मीडिया सहित डिजिटल प्लेटफॉर्म शामिल हैं। व्यक्तिगत हस्तलिखित पत्र पारस्परिक संचार का एक रूप हैं, न कि जनसंचार माध्यम।

अतिरिक्त जानकारी:

- (a), (b), और (c) को स्पष्ट रूप से अनुच्छेद में शामिल किया गया है।

- (घ) यह निजी संचार है, सार्वजनिक जनसंचार नहीं।

Q50

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प इस लेख में लेखक के समग्र दृष्टिकोण का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

21वीं सदी में, संचार एक गतिशील और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में विकसित हो चुका है, जो तीव्र तकनीकी प्रगति और बदलती सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित है। प्रिंटिंग प्रेस से लेकर डिजिटल युग तक, संचार माध्यम गति, सटीकता और सुगमता की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए लगातार विकसित होते रहे हैं। हाल के दशकों में सबसे अधिक परिवर्तनकारी शक्तियों में से एक डिजिटल और जनसंचार माध्यमों का उदय रहा है। विशेष रूप से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने सूचना के उत्पादन और वितरण को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिससे व्यक्ति वैश्विक दर्शकों के साथ तुरंत सामग्री साझा कर सकते हैं। हालांकि, इस खुलेपन ने गलत सूचना, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में कमी और मौजूदा मान्यताओं को सुदृढ़ करने वाले प्रतिध्वनि कक्षों जैसी चुनौतियों को भी जन्म दिया है। टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र और अब डिजिटल प्लेटफॉर्म सहित जनसंचार माध्यम, जनमत, सांस्कृतिक मानदंडों और यहां तक कि राजनीतिक परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, फिल्मों और टेलीविजन नाटक न केवल मनोरंजन करते हैं बल्कि शिक्षा, जागरूकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के शक्तिशाली साधन भी हैं। दूसरी ओर, समाचार माध्यम एक प्रहरी की भूमिका निभाते हैं, सरकारों और संस्थानों को जवाबदेह ठहराते हैं, हालांकि पूर्वाग्रह, सनसनीखेज खबरों और व्यावसायिक हितों के लिए अक्सर इसकी आलोचना की जाती है।

शिक्षा क्षेत्र ने भी कक्षा से परे ज्ञान प्रदान करने के साधन के रूप में जनसंचार माध्यमों को अपनाया है। शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम, पॉडकास्ट और यूट्यूब व्याख्यानों ने सीखने को अधिक सुलभ बना दिया है, विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में। इंटरैक्टिव उपकरणों और मल्टीमीडिया सामग्री के एकीकरण ने शिक्षार्थियों की सहभागिता और समझ को बढ़ाया है। फिर भी, डिजिटल विभाजन एक महत्वपूर्ण बाधा बना हुआ है, क्योंकि प्रौद्योगिकी और विश्वसनीय इंटरनेट की पहुँच विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक-आर्थिक समूहों में असमान बनी हुई है।

वैश्वीकरण के संदर्भ में, मीडिया विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और अनुभवों को जोड़ने वाले एक सेतु के रूप में उभरा है। अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा, संगीत और ऑनलाइन सहयोग अंतर-सांस्कृतिक समझ और सहानुभूति को बढ़ावा देते हैं। हालांकि, यह वैश्विक जुड़ाव सांस्कृतिक समरूपता को लेकर चिंताएं भी पैदा करता है, जहां प्रमुख संस्कृतियां स्थानीय परंपराओं पर हावी हो सकती हैं। इस प्रकार, संचार प्रौद्योगिकियों ने निस्संदेह मानवीय संपर्क को बढ़ाया है, लेकिन साथ ही साथ जटिल चुनौतियां भी पेश की हैं जिनके लिए गहन मूल्यांकन और जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता है।

- (a) जनसंचार माध्यमों की पूर्ण आलोचना
- (b) कमियों को स्वीकार किए बिना दृढ़तापूर्वक समर्थन करना
- (c) लाभों और चुनौतियों दोनों को उजागर करने वाला संतुलित दृष्टिकोण
- (d) संचार प्रौद्योगिकियों के प्रति उदासीन

उत्तर:

सी

सूरज:

परिचय:

यह लेख संचार प्रौद्योगिकियों और जनसंचार माध्यमों पर सूक्ष्म चर्चा प्रस्तुत करता है।

सूचना संवर्धक:

लेखक संचार प्रौद्योगिकियों के परिवर्तनकारी और लाभकारी पहलुओं को स्वीकार करते हुए, साथ ही महत्वपूर्ण कमियों की ओर भी इशारा करते हैं, जो एक संतुलित दृष्टिकोण का सुझाव देता है।

अतिरिक्त जानकारी:

- (क) और (ख) एकतरफा दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।
- (घ) गलत है क्योंकि लेखक सक्रिय रूप से विषय पर चर्चा में लगा हुआ है।

